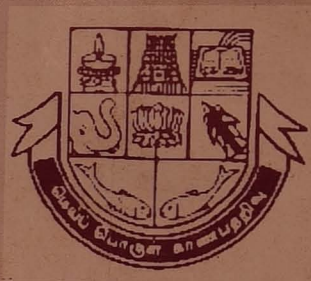


410 H

MADURAI KAMARAJ UNIVERSITY



(University with Potential for Excellence)

Distance Education

www.mkudde.org



404

PRE-FOUNDATION COURSE

PART - I

Lessons 1-19

HINDI



410 H

DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION

|||
H

PRE – FOUNDATION COURSE

Part I - HINDI

I
N
D

Lessons 1 – 19

I

|||

Madurai Kamaraj University
Madurai – 625 021

All copyright privileges are reserved



410 H

DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION

PRE - FOUNDATION COURSE

Part I - HINDI

Lessons I - 12

Printed by : M/s. LITTLE STAR, Madurai - 625 020. 800 Copies 2008-'09.

Madurai Kamaraj University
Madurai - 625 021

All copyright privileges are reserved

SYLLABUS FOR PRE FOUNDATION COURSE - PART - I HINDI

UNIT 1

- Lesson 1 : Hindi Grammar - Basics - Apna - Cahiye - Doubtful Past Tense, Past Conditional Tense - Subjective Tense - Habitual Tense - Present Participle - Past Participle
- Lesson 2 : Hindi Grammar - Basics - hona - padna - de - lag - khi - ke badh - ke pahale - jo - jab - jahan - jithna - siva - bana - alava - Compound verbs

UNIT 2 (Protion for memory)

- Lesson 3 : Poetry - Tulsidas Ke Dohe - 5
- Lesson 4 : Poetry - Rahim Ke Dohe - 5

UNIT 3 (Protion for memory)

- Lesson 5 : Poetry - "Pushpa ki Abhilasha" - Makhanlal Chaturvedi
- Lesson 6 : Poetry - "Unhen pranam" - Sohanlal Dwivedi

UNIT 4

- Lesson 7 : Poetry - Khand Kavya - "Kurushetra" - 50 lines - 'Dinkar'

UNIT 5

- Lesson 8 : Prose - "Ye Suyiyan" - Bhandand Anand Koshalyayan
- Lesson 9 : Poetry - "Ruchi" - Balakrishna Bhatt

UNIT 6

- Lesson 10 : Prose - Desh - videsh ke swatantrata Divas
- Lesson 11 : Prose - Berojgari ki samsya evam - Samadhan

UNIT 7

- Lesson 12 : Prose - Novel - "Nirmala" - Part - I - Premchand
- Lesson 13 : Prose - Novel - Nirmala - Part II - Premchand

UNIT 8

- Lesson 14 : Prose - Story - "Chota Jadoogar" - Prasad
- Lesson 15 : Prose - Story - "Inam" - Jainendra

UNIT 9

- Lesson 16 : Prose - General Essay - Patrakaritta
- Lesson 17 : Prose - General Essay - Meenakshi Temple

UNIT 10

- Lesson 18 : Letters
- Lesson 19 : Reporting a function / incident

SYLLABUS FOR INTRODUCTORY COURSE - PART - I HINDI

(From the Academic Year 2008-09)

यूनिट - 1

पाठ - 1

हिन्दी व्याकरण - अपना

5

काल

11

कालभेदों के अर्थभेद

15

भाववाचक संज्ञा

8

पाठ - 2

विशिष्ट सहायक क्रियाएँ (लग, चुक्, सक्)

18

रंजक क्रियाएँ (डाल, पढ़, जा, ले, दे)

24

यूनिट - 3

पाठ - 3

कविता - तुलसीदास के दोहे

29

पाठ - 4

कविता - रहीम के दोहे

30

पाठ - 5

कविता - माखनलाल चतुर्वेदी - पुष्प की अभिलाषा

33

पाठ - 6

कविता - सोहनलाल द्विवेदी - उन्हें प्रणाम

35

यूनिट - 4

पाठ - 7

कविता - रामधारी सिंह दिनकर - कुरुक्षेत्र

40

यूनिट - 5

पाठ - 8

ये सुइयाँ

45

पाठ - 9

रुचि

46

युनिट - 6

पाठ - 10

देश-विदेश के स्वतंत्रता दिवस

50

पाठ - 11

भारत में बेरोजगारी की समस्या

52

युनिट - 7

पाठ - 12

निर्मला भाग - 1

55

पाठ - 13

निर्मला भाग - 2

56

युनिट - 8

पाठ - 14

छोटा जादूगर

57

पाठ - 15

जैनेन्द्र कुमार - इनाम

59

युनिट - 9

पाठ - 16

पत्रकारिता

66

पाठ - 17

मीनाक्षी मंदिर

68

युनिट - 10

पाठ - 18

पत्र लेखन

70

पाठ - 19

खबर तैयार करना

78

यूनिट - 1

पाठ - 1

अपना

(हिंदी में 'अपना' का प्रयोग विशिष्ट रूपों में होता है। यह तीनों पुरुषों में कर्ता के लिए प्रयुक्त, निजवाचक सर्वनाम है -

मैं अपना काम कर रहा हूँ।

तुम अपना काम करो।

वह अपना काम कर रहा है।

कई भारतीय भाषाओं में ऐसा निजवाचक शब्द नहीं है और उनमें निजवाचकत्व प्रदर्शित करने के लिए -मैं के लिए - मेरा, तुम के लिए- तुम्हारा, वह के लिए -उसका का प्रयोग होता है, जो हिंदी में गलत है।)

हिंदी में 'अपना' कर्ता के लिए प्रयुक्त निजवाचक शब्द है। इस कारण कर्ता के पुनरुल्लेख के लिए वाक्य में अपना का ही प्रयोग होना चाहिए।

मैं अपने घर जा रहा हूँ।

मैं अपने मामा के घर जा रहा हूँ।

तुम अपना नाम बताओ।

तुम लोग अपनी-अपनी जगह बैठो।

वह अपनी किताब लाना भूल गया।

सब लोग अपनी-अपनी चीज़ें यहाँ रख दें।

उसको अपना पैसा वापस चाहिए।

तात्पर्य यह है कि - 'मैं मेरे घर जा रहा हूँ' जैसे वाक्य गलत हैं। आगे के दो वाक्यों में अंतर देखिए -

(1) वह अपना नाम नहीं बता रहा है।

(2) वह उसका नाम नहीं बता रहा है।

दूसरे वाक्य में 'उसका' से निर्दिष्ट व्यक्ति कर्ता नहीं, कोई और है। पहले वाक्य में 'वह' और 'अपना' दोनों शब्दों से निर्दिष्ट व्यक्ति कर्ता नहीं, कोई और है, पहले वाक्य में 'वह' और

'अपना' दोनों शब्दों में निर्दिष्ट व्यक्ति एक ही है।

आगे दी गई तालिकाओं में कर्ता के साथ विविध वाक्यों में 'अपना' का प्रयोग किया गया है। आप इन वाक्यों का अभ्यास कीजिए और कर्ता बदलकर ऐसे अन्य वाक्य भी बोलने और लिखने का अभ्यास कीजिए -

मैं		काम करना चाहता हूँ।
वह		स्कूटर साफ़ कर रहा है।
तुम	अपना	नाम और पता बताओ।
उन्हें		काम स्वयं समाप्त करना चाहिए।
वह		धुन में मस्त थी।
मैं		नई कमीज़ पहने हूँ।
माता जी	अपनी	साड़ी नहीं लाई।
शीला		माता जी के साथ आ रही है।
मैं		घर नहीं जा रहा हूँ।
तुम	अपने	पिता जी के साथ आना।
वह		कपड़े धो रहा है।
तुझे		
उन्हें		
हमें	अपना	राशन कार्ड बदलवाना चाहिए।
तुम्हें		
आपको		
उन्हें/उसे		
तुम	अपने	घर जाओ।
क्या आप		कार्यालय से आ रहे हैं?

'अपना' का प्रयोग केवल संबंधकारक के रूप में नहीं होता। इसका प्रयोग अन्य कारकों को सूचित करनेवाले परसर्गों के साथ भी होता है। इनका विवरण आगे दिया जा रहा है—

(क) 'के लिए' के साथ

'अपना' का प्रयोग — 'लिए' परसर्ग से पहले किया जाता है और सर्वत्र 'अपना' का 'अपने' रूप ही प्रयुक्त होता है—

उदाहरण — तुम अपने लिए माड़ी ले लेना।

अभ्यास — नीचे दी गई तालिका के आधार पर वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए —

राम		घड़ी लाया है।
मैं		किताब चाहता हूँ।
उन्होंने	अपने लिए	घड़ी मँगवाई।
वे		
हम		कमीज़ खरीदना चाहते हैं।

(ख) 'से' के साथ — 'कर्ता' की अपनी स्थिति स्पष्ट करने के लिए 'अपना' का 'से' परसर्ग के साथ प्रयोग करते हैं। ऐसे प्रयोग अपादान कारक को प्रकट करते हैं।

उदाहरण — माँ बच्चे को अपने से दूर नहीं रहने देती।

अभ्यास — नीचे दी तालिका के अनुसार वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए —

वे	हमें			दूर रखना चाहते हैं।
क्या हम	उन्हें	अपने	से	दूर भगाएँगे।
तुम्हें	उनको			अलग हटाने का प्रयत्न करना चाहिए

(ग) 'से' तुलनात्मक — स्वयं से तुलना करने के लिए 'अपना' का प्रयोग 'से' परसर्ग के साथ करते हैं।

उदाहरण — वह अपने से बड़े बच्चे के साथ नहीं लड़ सकता।

अभ्यास — नीचे दी गई तालिका के आधार पर अधिकतम वाक्य बनाइए—

इसकी			तुलना न करें।
सभी को			बलवान समझो।
वह मदेव	अपने	से	कमज़ोर की सहायता करता है।
तुम्हें			छोटों के प्रति स्नेह रखना चाहिए।
वह			बड़े व्यक्ति को देखकर सहम गया।

(घ) स्वतः के अर्थ में — ‘अपने’ के बाद ‘आप’ का प्रयोग स्वतः का बोध कराता है।

उदाहरण — गिलास अपने आप टूट गया।

नीचे दी गई तालिका के आधार पर वाक्य बनाइए—

घड़ी			खराब हो गई।
निदेशक			ही यहाँ आए।
बीना	अपने	आप	वहाँ पहुँच गई।
गाड़ी			रुक गई।
बल्ब			फ्यूज़ हो गया।

(च) ‘को’ के साथ — ‘को’ के साथ ‘अपना’ का प्रयोग कर्म के रूप में होता है।

उदाहरण — मैं अपने को इस उलझन से दूर रखना चाहता हूँ।

अभ्यास — नीचे दी गई तालिका के आधार पर अधिकतम वाक्य बनाइए —

मैं			इसमें नहीं फँसाना चाहता।
तुम			इससे दूर क्यों रखना चाहते हो।
उसने	अपने	को	मुकदमे में उलझाकर ठीक नहीं किया।
वह			सबसे योग्य समझता है।
बच्चे			शरारती नहीं मानते।

‘अपनों’

निकट के व्यक्तियों के संदर्भ में ‘अपनों’ का प्रयोग किया जाता है। यह वास्तव में ‘अपने लोगों’ के स्थान पर प्रयुक्त होता है।

उदाहरण — सब लोग अपनों की मदद करते हैं।

अभ्यास — नीचे दी गई तालिका के आधार पर अधिकतम वाक्य बनाइए —

आप			चाहते हैं।
वे		को	भूल गए।
सब	अपनों		ही पूछते हैं।
हम		की	मदद नहीं कर सकते।

अपना-अपना, अपनी-अपनी, अपने-अपने —

बहुवचन कर्ता के साथ 'अपना' की आवृत्ति भी होती है। इससे प्रत्येक इकाई के अलग-अलग होने की सूचना मिलती है।

उदाहरण — हमें सावधानी से अपनी-अपनी बात कहनी है।

अभ्यास — नीचे दी गई तालिका के आधार पर वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए —

तुम लोग		बात कहो।
बच्चो !	अपनी-अपनी	किताबें निकालो।
सब लोग		
हम/सब लोग	अपने-अपने	घर जाएँ।
		काम कर लें।
सबको	अपना-अपना	खाना बनाना चाहिए।

पुनरीक्षण

इस पाठ में 'अपना' के संबंध में विभिन्न अभ्यास दिए गए हैं उन्हें एक बार पढ़िए।

अभ्यास

1. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध कीजिए—

अगर आप समय दे सकें तो मैं मेरी बात कहूँ।

जल्दी ही तुम तुम्हारे घर लौटने की सूचना देना।

मैं मेरी कमीज़ पहने हूँ।

यह बात आप आपका रिकार्ड देखकर ही ठीक से बता सकते हैं।

हमें हमारा काम करना चाहिए।

आप आपकी चिट्ठी पढ़कर देख लें, तो पता चल जाएगा कि क्या बात है।

मैंने राम से उसका (राम का) पता पूछा, किंतु वह उसका पता नहीं बताता।

अच्छा अब बहुत हो गया, आप आपका काम कीजिए।

वह हमसे हमारे घर का पता पूछ रहा था, किंतु हमने हमारे घर का पता नहीं बताया।

हो सके तो तुम कल तुम्हारी पुस्तक ले जाना।

सब लोग उनको उनका उपहार दे रहे थे।

मुझे मेरा राशन कार्ड बदलवाना है। तुमने तुम्हारा कार्ड किससे बदलवाना था?

तुम तुम्हारे से ऊपर देखकर तुलना करोगे तो दुख होगा।

मैं मेरे भाई के साथ खेलता हूँ।

आप आपको देखिए।

‘अपना’ का उचित रूप लगाकर निम्नलिखित शब्दों की सहायता से वाक्य बनाइए—

फूलमती, जाएगी, पति को ढूँढने।

उसे, है, भरोसा, बलशाही बाहों का।

लोग, उपहार, एक दूसरे को, दे रहे थे।

वह, पालन, न, वचन, सका, कर का।

खूबी, इस ग्रामोफोन की, है, कि गाना, ही, समाप्त होने पर, जाता है, यह बंद हो।

मामा के घर, वह, कल, था गया।

तुम, लिखो, नाम और पता, पर, इस कागज़।

करें काम, सब लोग।

श्री रमेश, हैं, जो रहे, के यहाँ, बहिन।

काम करो, तुम।

अभिव्यक्ति अभ्यास

एक कहानी लिखिए, जिसमें ‘अपना’ का प्रयोग आठ-दस बार हो।

काल

क्रिया एक विकारी शब्द है और इसमें कई कारणों से विकार या रूपान्तर होता है। क्रिया में लिंग, वचन और पुरुष के कारण जो परिवर्तन होते हैं, उनके बारे में हम संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अध्यायों में पढ़ चुके हैं।

इनके अतिरिक्त क्रियाओं में इन कारणों से भी परिवर्तन आता है—

1. काल
2. अर्थ
- वाच्य

इस अध्याय में 'काल' का विवेचन किया जाएगा।

काल

'काल' का अर्थ है — समय। क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

काल के भेद — काल के मुख्य तीन भेद हैं—

1. वर्तमान काल
2. भूतकाल
3. भविष्यत् काल

1. वर्तमान काल : क्रिया के जिस रूप से वर्तमान (चल रहे) समय का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं। जैसे—

मोहन बाग में घूमता है।

मैं सच बोलता हूँ।

वर्तमान काल के तीन भेद हैं —

(क) सामान्य वर्तमान : क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल का क्रिया का सामान्य रूप से होना पाया जाए, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं। इसमें क्रिया का वर्तमान काल में निश्चित रूप से होना पाया जाता है। जैसे—

राम पढ़ता है।

सीता गाती है।

विशेष – (i) सामान्य वर्तमान काल की क्रिया 'ता है', 'ती है', 'ते हैं', 'ता हूँ', 'ती हूँ', तथा 'ती हैं' प्रत्यय जुड़ने से बनती हैं।

(ii) क्रिया के इस रूप का प्रयोग सामान्य प्राकृतिक सत्य, सिद्धान्त कथन तथा स्वभावचित्रण में होता है। जैसे—

पृथ्वी घूमती है।

दो और दो चार होते हैं।

(ख) अपूर्ण वर्तमान : अपूर्ण का अर्थ है जो पूरा न हो। अर्थात् क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी जारी (चालू) है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं। जैसे—

मीता पत्र लिख रही है।

मैं रेडियो सुन रहा हूँ।

विशेष – (i) अपूर्ण वर्तमान की क्रियाएँ मूल धातु के साथ 'रहा है', 'रहे हैं', 'रही है' तथा 'रही हैं' जोड़ने से बनती है।

(ii) इसका प्रयोग सातत्य, निकट भविष्य तथा कभी-कभी भविष्य के लिए भी होता है। जैसे — बच्चा प्रतिदिन उन्नति कर रहा है।

पृथ्वी घूमती है।

दो और दो चार होते हैं।

गीता सदा सत्य बोलती है।

(ग) संदिग्ध वर्तमान : क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल की क्रिया के होने में सन्देह पाया जाए अथवा वर्तमान काल में क्रिया के होने का निश्चित रूप से पता न चले उसे संदिग्ध काल कहते हैं। जैसे—

राम आता होगा।

वह मेरी प्रतीक्षा करता होगा।

सीता गाती होगी।

2. भूतकाल — भूतकाल का अर्थ है — बीता हुआ समय। क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं। जैसे—

मैंने पुस्तक पढ़ी।

भूतकाल के छः भेद हैं —

(क) सामान्य भूतकाल : क्रिया के जिस रूप से साधारणतः काम के बीते हुए समय में होना पाया जाए, उसे सामान्य भूतकाल कहा जाता है। जैसे—

मैं गया।

राम ने खाना खाया।

श्याम ने पत्र पढ़ा।

(ख) आसन्न भूतकाल : 'आसन्न' का अर्थ है निकट। इस में यह जाना जाता है कि काम भूतकाल में आरम्भ होकर अभी-अभी समाप्त हुआ है। जैसे—

मैंने अपना पाठ याद कर लिया है।

लड़कों ने फल खाए हैं।

बच्चे स्कूल गए हैं।

(ग) पूर्ण भूतकाल : क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य भूतकाल में ही पूरा हो गया था, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं। जैसे—

सीता यहाँ आई थी।

श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथी थे।

मैंने पत्र लिखा था।

विशेष : पूर्ण भूतकाल की क्रिया के अन्त में था, थे, थी का प्रयोग किया जाता है।

(घ) अपूर्ण भूतकाल : क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में काम के होने का तो ज्ञान हो, किन्तु उसकी पूर्णता का पता न चले, वहाँ अपूर्ण भूतकाल होता है। जैसे—

राम पढ़ रहा था।

लता गीत गा रही थी।

बच्चे खेल रहे थे।

इन वाक्यों से पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में जारी थी।

(ङ) संदिग्ध भूतकाल : संदिग्ध का अर्थ है — सन्देहपूर्ण। जब क्रिया के भूतकाल में होने पर संदेह किया जाए, तब वहाँ संदिग्ध भूतकाल होता है। जैसे—

बस चली गई होगी।

राम ने पत्र लिखा होगा।

विशेष : संदिग्ध भूतकाल का प्रयोग संभावना, अनुमान और जिज्ञासा आदि के लिए होता है।

(च) हेतुहेतुमद् भूतकाल : 'हेतु' कारण को कहते हैं अर्थात् जहाँ भूतकाल की क्रिया किसी कारण पर आधारित हो। इस रूप में प्रयुक्त दो वाक्यों में क्रियाओं का परस्पर 'कार्य-कारण' सम्बन्ध सूचित होता है अर्थात् एक क्रिया दूसरी क्रिया पर आधारित होती है। जैसे—

यदि गीता परिश्रम करती तो उत्तीर्ण हो जाती।

यदि धूप निकलती तो कपड़े सूख जाते।

विशेष : हेतुहेतुमद् भूतकाल के वाक्य में—

दो क्रियाएँ होती हैं।

मूल धातु के अन्त में ता, ते, ती जुड़ते हैं।

“यदि-तो” द्वारा वाक्य जुड़े होते हैं।

3. भविष्यत् काल : 'भविष्यत् काल' आने वाले समय को कहते हैं। जब किसी क्रिया का आने वाले समय में करना या होना पाया जाए, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे—

मैं पुस्तक पढ़ूँगा।

वह आगरा जाएगा।

(क) सामान्य भविष्यत् भूतकाल : आने वाले समय में क्रिया के सामान्य रूप से क्रिया होने की सूचना देने वाले क्रिया रूप को सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे—

कल समारोह होगा।

मैं शाम को पढ़ूँगा।

(ख) संभाव्य भविष्यत् भूतकाल : जब आने वाले समय में क्रिया के होने या करने की सम्भावना पाई जाए, वहाँ संभाव्य भविष्यत् काल होता है। जैसे—

शायद आज वर्षा हो।

शायद वे आज आएँ।

(ग) हेतुहेतुमद् भविष्यत् भूतकाल : क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि भविष्यत्

काल की क्रिया का होना किसी दूसरी क्रिया के होने पर आधारित है, उसे हेतुहेतुमद् भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे—

यदि तुम आओगे तो मैं नाटक देखने चलूँगा।

यदि पाकिस्तान भारत पर हमला करेगा तो वह मुँह की खाएगा।

कालभेदों के अर्थभेद

रूप में भले ही क्रियाएँ कुछ हों, प्रयोग में आकर उनके विविध अर्थ हो जाते हैं। जिन अर्थों में उनका व्यवहार होता है, नीचे उनकी सोदाहरण व्याख्या की जा रही है।

(1) सामान्य वर्तमान

(क) कार्य की वर्तमानता — मैं लिखता हूँ। मंजू पढ़ती है।

(ख) स्वभाव — वह अच्छा गाता है।

(ग) निकट भविष्य — लो, मैं आता हूँ।

भूत (वर्णन में) — भरत आते हैं, सूनी अयोध्या देखकर खिन्न होते हैं।

(घ) सिद्धान्त — विशेषण मंजा की विशेषता बताता है।

(ङ) आवृत्ति — जब-जब ऐसा होता है, तब-तब भगवान् अवतार लेते हैं।

(च)

(2) सामान्य भूत

(क) पूर्वघटित कार्य — मैंने उसे रुपये दिये। वह आया।

(ख) आसन्न भविष्यत् — तुम चलो, मैं आया। अब वह गिरा कि गिरा।

(ग) सामान्य भविष्यत् — मैं गया तो तुम्हारे लिए मिठाई लाऊँगा।

(घ) वर्तमान — लो, मैं चला।

(3) सामान्य भविष्यत्

(क) होने वाला कार्य — वह जायगा। मैं सोऊँगा।

(ख) वर्तमान की कल्पना — ऐसा वर कहीं न मिलेगा।

(ग) प्रार्थना — क्या आप चलेंगे ? क्या आप मेरी बात सुनेंगे ?

(घ) संकेत (शर्त) — यदि ऐसा होगा, जो अनर्थ होगा।

(4) संदिग्ध वर्तमान

- (क) वर्तमान में सन्देह — वह अभी आता होगा। वे पछताते होंगे।
- (ख) कल्पना (संभावना) — यहाँ से तेल निकलता होगा, आप ऐसा सोचते होंगे।
- (ग) अपूर्ण भूत का सन्देह — मैं जानता हूँ कि वे क्या कहते होंगे।
- (घ) भविष्यत् — जब तुम पहुँचोगे तो वे खाना खाते होंगे।

(5) संदिग्ध भूत

- (क) भूतकाल में सन्देह — तुमने किया होगा। वह पहुँच गया होगा।
- (ख) अनुमान (संभावना) — अब तो गाड़ी आ गयी होगी।
- (ग) जिज्ञासा — चाँद पर पहुँचकर उन्होंने क्या खाया होगा।

(6) संभाव्य वर्तमान

- (क) वर्तमान में संभावना-शायद वह ऐसा समझता हो।
- (ख) धर्म—हमें ऐसा नौकर चाहिए जो सब काम करता हो।
- (ग) उत्प्रेक्षा — तुम ऐसा बोलते हो मानो (जैसे) शेर गरजता हो।
- (घ) भविष्यत् (शर्त) — यदि मैं सोता होऊँ तो मुझे न जगाना।

(7) संभाव्य भूत

- (क) भूतकाल में संभावना हो सकती है कि उसने यह न किया हो।
- (ख) उत्प्रेक्षा — वह खाने पर ऐसे टूट पड़ा मानो कभी कुछ खाया ही न हो।
- (ग) संदेह — कहीं वह भाग ही न गया हो।
- (घ) शर्त (संकेत) — यदि वह चला गया हो तो पत्र लौटा लाना।

(8) संभाव्य भविष्यत्

- (क) भविष्य में संभावना — हो न हो। कहीं वह लौट न जाए।
- (ख) इच्छा — नौकर से कहो कि चाय लाए। जाए भाड़ में।
- (ग) कर्तव्य — ऐसा क्यों न करें ?
- (घ) उद्देश्य — हम ऐसा करें कि काम बन जाए।
- (ङ) शर्त (संकेत) — यदि वे जायें तो तुम भी चले जाना।
- (च) अनुमति — क्या हम चलें ? आप उठा लें।

(9) सामान्य संकेतार्थ

- (क) शर्त — मैं जाता तो उनसे अवश्य मिलता।
- (ख) अपूर्ण इच्छा — काश कि मैं भी वहां होता।
- (ग) संभावना — संभव है कि वे न पूछते।
- (घ) संदेह — वह क्या कहता और क्या करता ?
- (ङ) घटना की नियमितता — मैं रोज शाम को कुटिया में जाता, साधु से मिलता और खुलकर बातें करता। [ने भी भूत के 'था' का तोप]

(10) पूर्ण संकेतार्थ

- (क) पूर्णभूत की असिद्ध शर्त — यदि मैं गया होता तो काम बन जाता।
- (ख) असिद्ध इच्छा — तुमने अपना वचन पूरा किया होता।
- (ग) संभावना — सम्भव है वह गया होता, किन्तु तुमने मना ही कर दिया था।

(11) नेमी संकेतार्थ

- (क) शर्त — यदि मैं ऐसा काम करता होता, तो धनी हो गया होता।
- (ख) इच्छा — तुम भी चाहते थे कि छोटा लड़का पड़ता होता।

(12) नेमी भूत

- (क) आदत या नियमितता — मैं उनके घर जाता था और घंटों बैठता था।
- (ख) अभ्यास — चोर चक्कर लगाता फिरता था।
- (ग) तात्कालिक कार्य — वह जाता ही था कि पीछे से किसी ने डंडा मार दिया।
- (घ) अपूर्ण भूत — 'कहाँ जा रहे हो ?' — 'तुम्हारे पास आता था।

(13) आसन्न भूत

- (क) साधारण अर्थ — पिता जी आए हैं। मुझे पुरस्कार मिला है।
- (ख) आवृत्ति — जब-जब वे आते हैं, तब-तब कुछ लेते आते हैं।
- (ग) दूरभूत — कालिदास ने कई नाटक लिखे हैं।
- (घ) अभ्यास — मैंने बहुत से उपन्यास पढ़े हैं।

(14) पूर्ण भूत

- (क) साधारण अर्थ—बाबू गया था। मैंने हिन्दी सीखी थी।

(ख) आसन्न भूत—मैंने आपको इसलिए बुलाया था कि आपसे सब सुन लूँ।

(ग) तात्कालिक दो घटनाएँ — वह घर से निकला ही था कि वर्षा होने लगी।

अभ्यास

1. क्रिया के सामान्य वर्तमान, सामान्य भूत और संदिग्ध वर्तमान से भविष्यत् काल का अर्थ कैसे उपलब्ध होता है ? दो-दो उदाहरण दीजिए।
2. भूतकालिक अर्थ देनेवाले भिन्न-भिन्न क्रियाओं के उदाहरण दीजिए।
3. क्रिया के सम्भाव्य रूपों के उदाहरण देकर उनके भिन्न-भिन्न अर्थ कीजिए।

पाठ — 2

विशिष्ट सहायक क्रियाएँ (लग्, चुक्, सक्)

संयुक्त क्रिया में मुख्य क्रिया के अतिरिक्त एक या एक से अधिक सहायक क्रियाएँ होती हैं। सहायक क्रियाएँ प्रकार्य की दृष्टि से तीन प्रकार की हैं — (क) कालवाचक सहायक क्रियाएँ — (ख) रंजक सहायक क्रियाएँ तथा (ग) अन्य (पक्ष एवं वृत्तिबोधक) सहायक क्रियाएँ। इनके एक-एक उदाहरण देखिए —

वह सिनेमा देखता होगा।

(‘होगा’- कालवाचक सहायक क्रिया)

उसने शेर को मार डाला।

(‘डाला’- रंजक सहायक क्रिया)

वह खाना खा चुका है।

(‘चुका’- अन्य सहायक क्रिया)

कालवाचक सहायक क्रियाओं को हम यहाँ छोड़ दें। रंजक और अन्य सहायक क्रियाओं में एक स्पष्ट भेद है कि प्रयोग की दृष्टि से रंजक क्रियाएँ प्रायः कम व्यापक होती हैं और अन्य सहायक क्रियाएँ अधिक व्यापक होती हैं। जैसे-ऊपर के वाक्यों को ही लें। ‘डालना’ रंजक सहायक क्रिया के रूप में केवल सकर्मक क्रियाओं के साथ आता है, अकर्मक के साथ नहीं। इसलिए ‘हँस डाला’, ‘रो डाला’ जैसे प्रयोग नहीं मिलेंगे, दूसरी तरफ ‘चुकना’ का प्रयोग सकर्मक, अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं के साथ मिलेगा, ‘खा चुका’, ‘रो चुका’ आदि।

इस पाठ में जिन तीन सहायक क्रियाओं को चुना गया है, वे तीसरे प्रकार की सहायक क्रियाएँ हैं — अर्थात् न ये रंजक हैं, न कालवाचक।

लगना

यह व्यापार के आरंभ का सूचक है, जैसे — वह पढ़ने लगा।

इसका अर्थ है, उसने पढ़ने का काम शुरू कर दिया।

‘लगना’ से पूर्व आने वाली धातु में — ने जोड़ने अनिवार्य है।

वह खेलने लगा। (‘खेल’ के साथ ‘ने’ है)

बच्चा अब रोटी खाने लगा। (‘खा’ के साथ ‘ने’ है)

‘लगना’ क्रिया वाले वाक्य के कर्ता के साथ ‘ने’ परसर्ग नहीं लगता, भले ही मुख्य क्रिया के स्थान पर सकर्मक क्रिया का प्रयोग हुआ हो—

उसने खाना खाया।

वह खाना खाने लगा।

दोनों वाक्यों में सकर्मक क्रिया ‘खा’ का प्रयोग हुआ है, किंतु कर्ता के साथ ‘ने’ का प्रयोग केवल पहले वाक्य में ही है।

निषेधवाचक के साथ ‘लगना’ का प्रयोग सामान्य रूप से नहीं होता-वह घर जाने लगा।

वह घर नहीं जाने लगा।

(यह वाक्य व्यावहारिक नहीं है।)

निम्नलिखित तालिकाओं के आधार पर सही वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए —

वह	कुछ-कुछ	हिंदी अंग्रेज़ी उर्दू कन्नड़ गुजराती	पढ़ने लगा है।
		तैरने चलने दौड़ने	लगा है।
वह	पिछले शनिवार से दफ्तर स्कूल दुकान पर काम पर		जाने लगा है।

चुकना

यह व्यापार की समाप्ति का सूचक है —

वह खाना खा चुका।

‘चुकना’ के साथ समाप्ति अथवा पूर्णता का विशेष अर्थ जुड़ा हुआ है, इसलिए इसका प्रयोग मुख्य क्रिया के रूप में आने की स्थिति को छोड़कर (रहा/रहे/रही) के साथ नहीं होता—

वह खाना खा चुक रहा है। (यह वाक्य सही नहीं है)

‘चुकना’ के पूर्व क्रिया धातु के रूप में ही आती है—

वह पढ़ चुका है।

वह देख चुका।

‘चुकना’ का प्रयोग होने पर कर्ता के साथ ‘ने’ परसर्ग नहीं हाता, भले ही मुख्य क्रिया सकर्मक क्रिया क्यों न हो—

उसने खाना खाया।

वह खाना खा चुका।

निषेधवाचक के साथ ‘चुकना’ का प्रयोग नहीं होता—

वह घर जा चुका है।

वह घर नहीं जा चुका है। (दूसरा वाक्य व्यावहारिक नहीं है।)

नीचे दी गई तालिका के आधार पर वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए —

क्या	(1) वह	तुम	खाना खा	चुके हो?
	(2) वह	वह		चुका है?
	(3) वह	आप		चुके हैं?
	(4) वह	वे		चुके हैं?
हाँ	(5) मैं	मैं	खाना खा	मैं खा चुका हूँ।
	(6) वह	वह		वह खा चुका है।
	(7) मैं	मैं		मैं खा चुका हूँ।
	(8) वे	वे		वे खा चुके हैं।

सकना

यह सामर्थ्य द्योतक है —

मोहन घर जा सकता है। (अर्थात् मोहन में घर जाने की शक्ति है।)

‘सकना’ अनुमति का बोधक भी है—

तुम घर जा सकते हो, (अर्थात् तुम्हें घर जाने की अनुमति है।)

‘सकना’ के पूर्व आने वाली क्रिया भी केवल धातु के रूप में आती है —

वह उठ सकता है।

‘लगना तथा चुकना’ की तरह ही ‘सकना’ के प्रयोग में भी कर्ता के साथ ‘ने’ परसर्ग नहीं

जुड़ता —

उसने खाना नहीं खाया।

वह खाना नहीं खा सका।

कर्ता के साथ पहले वाक्य में ‘ने’ है, दूसरे वाक्य में ‘ने’ नहीं है, क्योंकि इसमें ‘सका’ का प्रयोग हुआ है। सामर्थ्य के अर्थ में ‘सकना’ का प्रयोग सामान्य रूप से ‘नहीं’ के साथ ही होता है—

वह खाना खा सका।

वह खाना नहीं खा सका। (यह वाक्य ही सहज है।)

नीचे दी गई तालिकाओं के आधार पर वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए —

यह	बक्स मेज़ कुर्सी बंडल	भारी नहीं है,	वह उठा सकता है।
काम पूरा हो गया, पानी बंद हो गया,	अब	तुम जा सकते हो। आप आ सकते हैं। वह जा सकता है। वे चल सकते हैं।	

पुनरीक्षण

1. इस पाठ में हमने तीन सहायक क्रियाओं का अभ्यास किया है “लगना, चुकना तथा सकना”।
‘लगना’ आरंभबोधक है।
‘चुकना’ समाप्तिबोधक है।
‘सकना’ सामर्थ्यबोधक है।
2. ‘लगना’ से पूर्व आने वाली धातु में ‘ने’ जुड़ता है— ‘जाने लगा’।
3. ‘चुकना’ तथा ‘सकना’ से पूर्व आने वाली क्रियाएँ धातु रूप में ही रहती हैं— ‘खा चुका’, ‘जा चुका’।
4. लगना और चुकना का प्रयोग ‘नहीं’ के साथ नहीं होता।
5. सामर्थ्यबोधक ‘सकना’ का प्रयोग सामान्य रूप में ‘नहीं’ के साथ ही होता है।
6. इन तीनों क्रियाओं के कर्ता के साथ ‘ने’ परसर्ग नहीं जुड़ता, भले ही क्रिया सकर्मक हो और भूतकाल में हो।

अभ्यास

1. रिक्त स्थानों को ‘लग्’, ‘सक्’, अथवा ‘चुक्’, के उचित रूप से भरिए—
 - (1) वह घर जाने (चुक, लग)
 - (2) वह खाना खा (लग, चुक)
 - (3) वह घर नहीं जा (चुक, सक)
 - (4) मोहन कल फ़िल्म नहीं देख (चुक, सक)
 - (5) वह रोज 10 बजे सोने (लग, सक)
2. निम्नलिखित वाक्यों को निषेधवाचक वाक्यों में बदलिए —
 - (1) वह खाना खा चुका है।
 - (2) वह नहा चुका है।
 - (3) वह कल ठीक दस बजे घर जाने लगा।
 - (4) वह जोकर को देखकर हँसने लगती है।

- (5) मैं महाभारत पढ़ चुका हूँ।
- (6) आजकल वह रामायण पढ़ने लगा है।
- (7) राम हँसने लगा।
- (8) मैं कविता पढ़ सकता हूँ।
- (9) शीला ऊँघने लगी।
- (10) शर्मा जी हमारे साथ आ सकते हैं।

3. सही विकल्प पर सही निशान लगाइए—

- (1) वह बड़ी मुश्किल से घर जा सका/नहीं जा सका।
- (2) सारे प्रयास के बावजूद वह घर जा सकेगा/नहीं जा सकेगा।
- (3) वह सारा काम कर चुका/नहीं कर सका।
- (4) वह साईकिल चलाने लगा/नहीं चलाने लगा।

अभिव्यक्ति अभ्यास

लगना, चुकना तथा सकना का सहायक क्रिया के रूप में प्रयोग करते हुए बाज़ार में खरीददारी के प्रसंग को लेकर दस-पंद्रह लाइनों का एक लेख लिखिए।

चाहिए का प्रयोग

1. तुमको कितने रुपये चाहिए?
2. मुझे एक सौ रुपए चाहिए।
3. उनको कुछ नहीं चाहिए।
4. हमें रोज़ शाम को खेलना चाहिए।
5. हमको रोज़ सुबह एक ग्लास पानी पीना चाहिए।
6. हम सबको कड़ी मेहनत करनी चाहिए।
7. बार बार कॉफी नहीं पीना चाहिए।
8. किसको आज बाज़ार जाना चाहिए?
9. हमें अपने देश को प्यार करना चाहिए।
10. उसे ठीक समय पर स्कूल जाना चाहिए।

रंजक क्रियाएँ (डाल, पड़, जा, ले, दे)

(हिंदी में संयुक्त क्रियाओं का प्रचुर प्रयोग होता है। संयुक्त क्रियाओं में एकाधिक क्रियाएँ होती हैं, जिनमें से एक मुख्य क्रिया होती है, शेष सहायक क्रियाएँ जैसे — 'वह खाता है' वाक्य में 'खा' मुख्य क्रिया है, तथा 'है' काल सूचक सहायक क्रिया है। अब 'खा गया है' संयुक्त क्रिया को ध्यान से देखें; इसमें तीन क्रियाएँ हैं — 'खा' मुख्य क्रिया है जो व्यापार विशेष की सूचना देती है; 'गया' इस 'खाने' की क्रिया में विशेष भाव उत्पन्न करता है, इसे रंजक क्रिया भी कहते हैं; 'है' कालवाचक सहायक क्रिया है, जो क्रिया के काल विशेष में घटित होने की सूचना देती है।)

डालना

यह केवल सकर्मक क्रियाओं के साथ आता है। खा डालना, तोड़ डालना, कुचल डालना आदि। 'हँस डालना', 'रो डालना' आदि प्रयोग नहीं होते, क्योंकि ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।

'डालना' से पूर्व आने वाली धातु सदा मूल रूप में आती है। 'डालना' व्यापार की भीषणता और कर्म के प्रति कर्ता की निर्ममता का अर्थ देता है—

वह शीशा तोड़ डालता है।

वह पुस्तकें फाड़ डालता है। आदि

'डालना' कर्म के प्रति कर्ता के भाव को किसी न किसी रूप में अवश्य संकेतित करता है।

संभवतः इसीलिए 'डालना' का प्रयोग सकर्मक क्रियाओं तक ही सीमित है।

निम्नलिखित तालिकाओं के आधार पर अधिकतम वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए —

उसने	गुस्से में	पुस्तक चिट्ठी पत्रिका	फाड़ डाली।
शिकारी ने एक ही गोली से		चीते शेर तेंदुए पागल हाथी	को मार डाला

पड़ना

सामान्यतः अकर्मक क्रियाओं के साथ इसका प्रयोग होता है। 'हँस पड़ा', 'गिर पड़ा' आदि। 'खा पड़ा', 'पी पड़ा' आदि नहीं होंगे, क्योंकि ये सकर्मक क्रियाएँ हैं।

'जाना' से पहले आने वाली क्रिया मूल रूप में आती है। 'सो जाना', 'आ जाना' आदि।

'जाना' व्यापार की आकस्मिकता अथवा पूर्णता का सूचक है। यह व्यापार के कर्ता के सामर्थ्य की ओर भी संकेत करता है—

वह एक दिन में पुस्तक पढ़ जाएगा।

वह रोटी खा गया।

वह डर गया।

वह सो गया।

निम्नलिखित तालिकाओं के आधार पर अधिकतम वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए—

वह	कच्चा फल कच्चे केले सूखी रोटी खट्टे आम	भी	खा जाता है।
	कड़वी चाय कच्चा दूध गाढ़ा शरबत		पी जाता है।
तेज़ आँधी के चलते ही		फल	
		फूल	
		पत्ते	गिर जाते हैं।
		पेड़	
		मकान	

‘लेना’

अकर्मक तथा सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं के साथ इसका प्रयोग मिलता है — ‘सो लेना’, ‘नहा लेना’, ‘खा लेना’, ‘लिख लेना’ आदि।

‘लेना’ के पूर्व क्रिया मूल रूप में आती है।

‘लेना’ कर्ता के स्वार्थ का सूचक है। कर्ता जब अपने हित के लिए कोई व्यापार करता है, तो क्रिया के साथ ‘लेना’ का प्रयोग किया जाता है।

वह रोज दस बजे नहा लेता है।

वह सूर्यास्त होने से पहले दूध गरम कर लेता है।

वह पीने से पहले दूध गरम कर लेता है।

निम्नलिखित तालिकाओं के आधार पर अधिकतम वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए —

मैं	नहा चुका हूँ,	तुम भी नहा लो।
वह		
लड़का	नहा चुका है,	आप भी नहा लें।
मोहन		
ऊषा को इम्तहान देना है, उसका ऑफिस दूर है, कल बाज़ार बंद है,	इसलिए	उसने सांरी किताबें खरीद लीं। उसने स्कूटर खरीद लिया। कपड़े आज ही खरीद लो।

‘देना’

सामान्य रूप से सकर्मक क्रियाओं के साथ ही इसका प्रयोग होता है और सकर्मक क्रियाओं में भी केवल उन क्रियाओं के साथ जो परहित के लिए होती हैं। खाना, पीना सामान्य रूप से परहित में नहीं होते, इसलिए ‘खा देना’, ‘पी देना’ जैसे प्रयोग भी नहीं मिलेंगे।

‘देना’ से पूर्व आने वाली क्रिया मूल रूप में आती है, किंतु अनुमतिबोधक ‘देना’ के पूर्व आने वाली धातु में ‘ने’ लगता है — ‘जाने देना’, ‘बैठने देना’ आदि।

‘देना’ परहित के लिए किए गए व्यापार का सूचक है। ‘लेना’ का विलोम है। ‘देना’ अकर्मक क्रिया के साथ आकस्मिकता का भी बोधक है—

उसने माहन को पुस्तक दे दी।

उसने बच्चे को नहला दिया।

उसने मेरा पत्र पढ़ दिया।

वह जोकर को देखते ही हँस दिया।

निम्नलिखित तालिका के आधार पर अधिकतम वाक्य बनाकर अभ्यास कीजिए —

मेरे				
इसके				
मोहन के	पास समय नहीं हैं,	तुम मेरे	भी कपड़े धो दो।	
ऊषा के				
	बच्चे		दो रोटियाँ	रख दी हैं।
मैंने	लड़के	के लिए	दो आम	
	मोहन		फल	रख दिए हैं।
			केले	

जान लो।

1. इस पाठ में हमने पाँच प्रमुख रंजक क्रियाओं का अभ्यास किया है।
2. 'डालना' केवल सकर्मक क्रियाओं के साथ आता है। यह व्यापार की भीषणता एवं कर्ता की कठोर मनोदशा का सूचक है।
3. 'पड़ना' व्यापार की आकस्मिकता का सूचक है, सामान्यतः अकर्मक क्रियाओं के साथ आता है।
4. 'जाना' सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं में आता है।
5. 'लेना' तथा 'देना' क्रमशः स्वार्थी एवं परार्थी क्रियाएँ हैं।

अभ्यास

1. डालना, पड़ना, जाना, लेना तथा देना का रंजक क्रिया के रूप में प्रयोग करते हुए प्रत्येक के लिए तीन-तीन वाक्य लिखिए।

2. कोष्ठक में दिए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनिए और उसके सही रूप के रिक्त स्थान में भरिए—

- (1) उसने सभी रोटियाँ (जाना, डालना)
- (2) वह खाना खा (जाना, डालना)
- (3) मोहन चलते-चलते गिर (डालना, पड़ना)
- (4) छोकरे को देखते ही वह हँस (डालना, पड़ना)
- (5) उसने खाना खा (लेना, देना)
- (6) माँ ने लड़के को दवा पिला (लेना, देना)
- (7) मैं कुछ नहीं खरीद सकता, सारे पैसे खत्म हो (पड़ना, जाना)
- (8) मैं चश्मा भूल गया हूँ, भाई जरा यह पढ़ (पड़ना, देना)
- (9) पहले आप हमें कम-से-कम दो बार पढ़ने.....को उत्तर लिखने को कहें।
(देना, डालना)
- (10) उसने दुश्मन को ज़हर खिला (देना, लेना)

अभिव्यक्ति अभ्यास

इस पाठ में सिखाई गई रंजक क्रियाओं का प्रयोग करते हुए आठ वाक्य बनाइए।

- (1)
- (2)
- (3)
- (4)
- (5)
- (6)
- (7)
- (8)

यूनिट - 2

पाठ - 3

तुलसीदास

परिचय

गोस्वामी तुलसीदास हिन्दी के शीर्ष कवि के रूप में विख्यात है। उनका जन्म संवत् 1558 वि. में माना गया है। इनकी माता का नाम हुलसी और पिता का नाम आत्माराम दूबे था। बाबा नरहरिदास उनके गुरु थे। तुलसीदास की पत्नी का नाम रत्नावली था, जिससे वे बहुत प्यार करते थे। कहते हैं कि पत्नी की डाँट के बाद राम-भक्ति की ओर उन्मुख हुए। बाद में तो आप राम के परम भक्त हो गये। आपने ब्रज और अवधि दोनों में काव्य की रचना की है। रामचरित मानस आपका सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ माना जाता है। व्यक्ति के लिए राम और देश के लिए राम-राज्य का आदर्श तुलसी की देन है।

तुलसीदास की रचनाओं में 'रामचरित मानस' उत्कृष्ट काव्य है। उसके अतिरिक्त 'पार्वती-मंगल', 'जानकी मंगल', 'बरवै रामायण', आदि काव्य महत्त्वपूर्ण एवं प्रामाणिक हैं।

प्रस्तुत दोहों में तुलसीदास ने व्यक्ति के बहुमुखी विकास तथा लोकनीति में निपुणता प्राप्त की कला सीखने-सिखाने का प्रयास किया है। तुलसी लोकनायक तथा भविष्यवक्ता थे।

दोहावली

1. गंगा यमुना सरसुती, सात सिन्धु भरपूर।

तुलसी चातक के मते, बिन स्वाती सब धूर।।

प्रस्तुत दोहे में कवि कहते हैं कि इस संसार में सब कुछ है। गंगा, यमुना, सरस्वती और सिन्धु का अपार जल भी है, लेकिन जिस प्रकार चकोर की प्यास केवल एक स्वाती की बूँद ही मिटा सकती हैं। उसी प्रकार कवि तुलसी की प्यास केवल राम के दर्शन से ही तृप्त हो सकती है।

2. जड़ चेतन गुन दोष मय, बिस्व कीन्ह करतार।

संत हंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारि विकार।

कवि तुलसी कहते हैं कि इस दुनिया में अच्छाई और बुराई दोनों विद्यमान है, भगवान ने

यह दोनों गुण सबमें समान रूप से दिए हैं किन्तु जिस प्रकार हंस पानी के अन्दर से मोती चुग लेता है उसी प्रकार हमें विकार का त्याग कर गुण रूपी मोती चुग लेना चाहिए।

3. एक भरोसों एक बल एक आस बिसवास।

स्वाति सलिल रघुनाथ-यश चातक-तुलसीदास।।

तुलसीदास को उनके जीवन का एक ही संबल है एक ही भरोसा है। क्योंकि श्री राम का यश स्वाति के जल की भाँति सर्वत्र फैला हुआ है, और तुलसीदास चातक की तरह उनके दर्शन के अभिलाषी हैं।

4. तुलसी मीठे वचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।

बसीकरन यह मंत्र है, परिहरू वचन कठोर।।

मीठे वचन की महिमा का बखान करते हुए कवि तुलसीदास कहते हैं कि मीठे वचनों से चारों ओर सुख का वातावरण पैदा हो जाता है। यह एक प्रकार का वशीकरण मंत्र है अर्थात् सभी उसके वश में हो जाते हैं अतः हमें कठोर वचन को त्याग देना चाहिए।

5. सोई ज्ञानी, सोई गुनी, जन सोइ ढाता ध्यानि।

तुलसी जाके चित भई, राग द्वेष की हानि।।

कवि तुलसीदास कहते हैं कि वही व्यक्ति शान, विद्वान, गुणी और ध्यानी हो सकता है, जिसके अन्दर राग-द्वेष अर्थात्, ईर्ष्या से भाव का अभाव हो, इससे रहित हो।

अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर दें :-

1. उस दोहे की पंक्तियों को लिखें, जिनमें मीठे वचन की महिमा का बखान किया गया है।
2. कवि तुलसीदास ने ज्ञानी होने के क्या लक्षण बताए हैं?
3. इन दोहों में कवि ने अपनी और श्रीराम की तुलना किनसे की है?

पाठ - 4

रहीम के दोहे

परिचय

कवि रहीम का पूरा नाम अब्दुरहीम खानखाना था। उनका जन्म सन् 1545 ई. में हुआ था। उन्होंने अरबी, फारसी, हिन्दी और संस्कृत की अच्छी योग्यता प्राप्त की थी। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। रहीम गुण-ग्राहक और दानी थे। रहीम के बरवै छन्द काफी प्रसिद्ध हैं।

उनके ग्रंथों में रहीम दोहावली, नगर-शोभा, बरवै नायिका-भेद, बरवै, शृंगार, सोरठा, रहीम काव्य, खेट कौतुकम, दीवाने फारसी आदि उल्लेखनीय हैं।

रहीम ने हिन्दी साहित्य की अद्वितीय सेवा की। उनके नीति और लोक व्यवहार संबंधी दोहे अत्यधिक लोकप्रिय हैं। सन् 1627 ई. में रहीम का देहान्त हुआ।

दोहे

1. रहीमन वे नर मरिचुकें, जे कहूँ माँगन जाँहिं।।

उनसे पहिले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहते हैं कि वे सब लोग मरे हुए के समान हैं जो किसी के आगे हाथ फैलाते हैं। लेकिन उनसे भी पहले वे मरे हुए के समान हैं जिनके मुँह से उनके लिए इंकार शब्द अर्थात् 'नहीं' निकलता है।

2. रहीमन देखिं बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।

जहाँ काम आवै सुई, कहाँ कहै तलवारि।।

रहीम कवि कहते हैं कि बड़ी चीज की गुस्ता देखकर छोटी चीज की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि जहाँ सुई का काम हों, वहाँ तलवार का कोई काम नहीं होता। अर्थात् दुनिया की छोटी से छोटी वस्तु का भी महत्व होता है।

3. रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गई सरग पताल।

आपु तो कहि भीतर भई, जूती-खात कपाल।।

६ - उक्ति

कवि रहीम जीभ को पगली कहते हैं जो कुछ भी अच्छा बुरा कह देती है। वह तो कहकर मुँह के भीतर समा जाती है और उसकी करनी का फल बेचारे सिर को जूती खाकर भुगतना पड़ता है। अर्थात् हमें अपनी बोली को लेकर बहुत सावधान रहना चाहिए।

4. टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।

‘रहिमन’ फिरि-फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार।।

कवि सत्संगति अर्थात् अच्छे लोगों की संगति की महिमा का बखान करते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार हमें अमूल्य मोतियों की टूटी माला को बार-बार पिरोते हैं ठीक उसी प्रकार अच्छे लोगों की मित्रता बार-बार टूटने पर भी जोड़ने का प्रयास करना चाहिए। रूठे मित्रों को मनाना चाहिए।

5. जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

चन्दन विष व्याप्त नहीं, लपटे रहत भुजंग।।

रहीम कवि के अनुसार अच्छे व्यवहार एवं प्रवृत्ति का व्यक्ति किसी कुसंगति से प्रभावित नहीं होता। जिस प्रकार चन्दन के वृक्ष पर विषैले साँपों के लिपटे रहने के बावजूद चंदन को विष का कोई असर नहीं होता।

अभ्यास

क. रहीम का जीवन परिचय दें।

ख. रहीम के ग्रंथों के नाम लिखें।

ग. कवि जीभ को ‘पगली’ क्यों कहते हैं?

घ. रहीम कवि ने कुसंगति की तुलना किससे की है?

यूनिट - 3

पाठ - 5 माखनलाल चतुर्वेदी

परिचय

माखनलाल चतुर्वेदी कवि और एक सफल पत्रकार रहे हैं। आपने 'कर्मवीर' का वर्षों संपादन किया। आपको 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से विभूषित किया गया है। आपकी रचनाएँ देश-प्रेम और नवयुवकों के लिए प्रेरणा लेकर चली हैं। 'कृष्णार्जुन युद्ध' आपका सफल नाटक है।

'भारतीय आत्मा' कहलाने वाले माखनलाल चतुर्वेदी देशभक्त कवि का जन्म संवत् 1945 में खंडवा में हुआ। युवक होते-होते आपने राष्ट्रीयता और देशभक्ति का बाना धारण कर लिया। अपनी आदर्शवादिता के कारण अपना समस्त जीवन राष्ट्र-यज्ञ में आहुति स्वरूप चढ़ा दिया। आपका उद्देश्य भारत की आत्मा में बैठ कर उसके दुख-दर्द की कहानी भारत के बच्चे-बच्चे के कानों तक पहुँचा देना है। प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत भारतीय जीवन पश्चिम के सम्पर्क में आ रहा था। विदेशी जीवन-पद्धति और राष्ट्रीय गुणों को जानने देखने और समझने का अवसर आ रहा था कि इसी समय महात्मा गाँधी के आगमन से राजनीतिक चेतना की एक अभूतपूर्व लहर समस्त देश में दौड़ गई। जलियनवाला बाग के हादसे ने इस चेतना को और अधिक बल दिया। इसी राजनीतिक भावना को साहित्यिक आधार पर प्रतिष्ठित करने के प्रयत्न में चतुर्वेदी जी ने पुनीत मुक्तकों के रूप में एक नवीन काव्य शैली को जन्म दिया। देश भक्ति-और प्रगतिशील भावना आपके काव्य में कूट-कूट कर भरी है। काव्य में ओज और प्रसाद गुणों की प्रधानता है। आपका निम्नांकित गीत ओज, माधुर्य और प्रसाद-गुणों के साथ-साथ आपकी देश-भक्ति का भी अन्यतम उदाहरण है।

चतुर्वेदीजी बहुमुखी प्रतिभा लेकर पैदा हुए थे। कविता में आपने अपनी स्वतन्त्र धारा बहाई है। भावों की मधुरता और उक्ति-वैचित्र्य आपके विशेष गुण हैं। हिन्दी की कविता में आप एक ओर द्विवेदीकालीन भाव-धारा के प्रभाव से मुक्त रहे तो दूसरी ओर अपने पर छायावादी प्रभाव भी पड़ने नहीं दिया। आप राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत कविता ही करते रहे। आपकी प्रमुख रचनाएँ 'हिमकिरीटिनी', 'हिमतरंगिनी', 'युग-चरण', 'समर्पण' आदि हैं।

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के

गहनों में गूँथा जाऊँ।

चाह नहीं, प्रेमी बाला में

बिंध प्यारी को ललचाऊँ।।

चाह नहीं, सम्राटों के शव पर,

हे हरि डाला जाऊँ।

चाह नहीं, देवों के शिर

चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।

मुझे तोड़लेना बनमाली

उस पथ में देना तू फेंक।

मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने,

जिस पथ जावें वीर अनेक।।

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि माखन लाल चतुर्वेदी एक फूल के द्वारा अपने मन के भाव व्यक्त कर रहे हैं। फूल अपने सामान्य उपयोग को स्वीकार न करते हुए अपना विशिष्ट रूप में इस्तेमाल चाहता है। वह किसी सुन्दरी के गहनों में गूँथा जाना नहीं चाहता न ही वह किसी प्रेमिका के गले का हार बनना चाहता है न तो वे किसी राजा की मृतशैया का हिस्सा होना चाहती है और न ही ईश्वर के ऊपर चढ़ाया जाना पसंद करता है। फूल की चाह तो बस देश के लिए शहीद होने वाले सपूतों की राह में बिछ जाने की है। उसी में वह अपना जीवन धन्य समझता है।

अभ्यास

1. प्रश्नों के उत्तर दें :-

1. 'एक भारतीय आत्मा' के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी का परिचय दें।

2. पुष्प की क्या अभिलाषा है?

3. 'मातृभूमि के वीर' कौन हैं?

4. पुष्प किन रूपों में अपना उपयोग नहीं चाहती है?

पाठ — 6

सोहनलाल द्विवेदी

परिचय

श्री सोहनलाल द्विवेदी हिन्दी के राष्ट्रीय कवि हैं। राष्ट्रीयता से संबंधित कविताएँ लिखनेवालों में आपका स्थान मूर्धन्य है। महात्मा गाँधी पर आपने कई भावपूर्ण रचनाएँ लिखी हैं, जो हिन्दी जगत् में अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। आपकी अभिव्यक्ति में नितांत स्वाभाविकता और सच्चाई है। आपकी रचनाएँ ओजपूर्ण रहती हैं। भाषा बिल्कुल सरल और आम बोल-चाल की होती है। द्विवेदी जी की कविता हमारी राष्ट्रीयता की परिचायक है। आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। भैरवी, पूजा गीत, सेवा ग्राम, प्रभाती, युगाधार, कुणाल आदि।

उन्हें प्रणाम

भिदा हुआ है दीन-अश्रु से जिनका मर्म,
मुहताजों के साथ न जिनको आती शर्म,
किसी देश में, किसी वेश में करते कर्म,
मानवता का संस्थापन ही जिनका धर्म!
ज्ञात नहीं हैं जिनके नाम!

उन्हें प्रणाम! सतत प्रणाम!

कोटि कोटि नंगों-भिखमंगों के जो साथ-
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,
शोषित जन के, पीड़ित जन के कर को थाम,
बढ़े जा रहे उधर, जिधर है मुक्ति प्रकाम,
ज्ञात और अज्ञात, मात्र ही जिनके नाम!

वन्दनीय उन सत्पुरुषों, को सतत प्रणाम !

1. भिदा हुआ.....सतत् प्रणाम।

प्रस्तुत कविता में कवि सोहनलाल द्विवेदी जी ने उन महाभावों को प्रणाम किया है जिनका हृदय दीन-दुखियों की व्यथा देखकर दुखी है और उनकी मदद करने में उन्हें कोई लज्जा नहीं

होती। उनका देश, उनका वेश सब मानवता की स्थापना में ही निहित है। हम उनका नाम तो नहीं जानते, लेकिन उन्हें हमारा प्रणाम है।

देश के करोड़ों भिखारियों की सहायता के लिए जो सहर्ष खड़े रहते हैं। आज जो शोषित हैं, पीड़ित हैं, उन सब का हाथ थामकर उन्हें मुक्ति के पथ पर ले जा रहे हैं। सचमुच वे अज्ञात मानव धन्य हैं। उन्हें हमारा प्रणाम है।

जिनके गीतों के पढ़ने से मिलती शान्ति,
जिनकी तानों के सुनने से झिलती भ्रान्ति,
छा जाती मुखमंडल पर यौवन की कान्ति,
जिनकी टेकों पर टिकने से टिकती क्रान्ति,
मरण मधुर बन जाता है जैसे वरदान,
अधरों पर खिल जाती है मादक मुसकान,
नहीं देख सकते जग में अन्याय-वितान,
प्राण उच्छ्वसित होते, होने को बलिदान,
जो घावों पर मरहम का कर देते काम!
उन सहृदय हृदयों को मेरे कोटि प्रणाम!

2. जिनके गीतों.....कोटि प्रणाम।

कवि उनके यश को उभारते हुए कहता है कि उन सद्पुरुषों के गीतों को पढ़कर शान्ति मिलती है और उसके तान से सारी दुविधाएँ दूर हो जाती है। आदमी युवावस्था की भाँति कांति प्राप्त कर लेता है और उनकी एक आवाज पर क्रांति का स्वर गूँजने लगता है। इनकी मृत्यु मानों एक वरदान की तरह होती है और इसे भी वे हँस-हँस कर सहते हैं। धरती के ये महापुरुष किसी भी अन्याय को नहीं सह सकते। वे प्राण को देश और मानव जाति के लिए न्योछावर करने को तत्पर रहते हैं। जो जख्मों के लिए मरहम का काम करते हैं। ऐसे सहृदय को मेरा प्रणाम।

उन्हें, जिन्हें है नहीं जगत में अपना काम,
राजा से बन गए भिखारी तज आराम,
दर-दर भीख माँगते, सहते वर्षा-घाम,
दो सूखी मधुकरियाँ दे देती विश्राम!

जिनकी आत्मा सदा सत्य का करती शोध,
जिनको है अपनी गौरव-गरिमा का बोध,
जिन्हें दुखी पर दया, क्रूर पर आता क्रोध,
अत्याचारों का अभीष्ट जिनको प्रतिशोध!
उन्हें प्रणाम! सतत प्रणाम !
जो निर्धन के धन, निर्बल के बल अविराम!
उन नेताओं के चरणों में कोटि प्रणाम!

3. उन्हें जिन्हें.....कोटि प्रणाम।

कवि सोहनलाल द्विवेदी जी कहते हैं कि ये लोग दुनिया में दूसरों के हित के लिए ही आए हैं, इन्होंने अपने सारे आराम छोड़ कर एक आम आदमी का रूप धारण किया। वे इधर-उधर धूमकर अपना काम चला लेते हैं। उनकी आत्मा सत्य पर गर्व करती है और दुखियों पर दया करते हैं। जो अत्याचारी और दुष्ट हैं। उनसे प्रतिशोध लेना ही उनका ध्येय होता है। अतः जो गरीबों के लिए धन, कमजोर के लिए ताकत के समान हैं उन्हें मेरा प्रणाम है।

मातृभूमि का जगा जिन्हें ऐसा अनुराग,
यौवन में ही लिया जिन्होंने है वैराग,
नगर-नगर की, ग्राम-ग्राम की छानी धूल,
समझे जिससे सोई जनता अपनी भूल,
जिनको रोटी-नमक न होती कभी नसीब,
जिनको युग ने बना रखा है सदा गरीब,
उन मुखों को, विद्वानों को, जो दिन-रात—
इन्हें जगाने को फेरी देते हैं प्रात,
जगा रहे जो सोये गौरव को अभिराम!
उस स्वदेश के स्वाभिमान को कोटि प्रणाम!
जंजीरों में कसे, सीखचों के उस पार
जन्मभूमि जननी की करते जय-जयकर,
सही कठिन हथकड़ियों की, बेटों की मार,
आज़ादी की कभी न छोड़ी टेक, पुकार,
स्वार्थ, लोभ, यश कभी सका है जिन्हें न जीत,

जो अपनी धुन के मतवाले, मन के मीत,

ढाने को साम्राज्यवाद की दृढ़ दीवार

बार बार बलिदान चढ़े, प्राणों को वार!

4. मातृभूमि.....प्राणों को वार!

कवि मातृभूमि के सपूतों को प्रणाम करता है जिन्होंने अपने देश के लिए अपनी समस्त सुविधाएँ छोड़ दीं। वे हर गाँव, हर शहर में धूमकर जनता में जागृति पैदा करते रहे। देश के उन गौरव को मेरा शत्-शत् प्रणाम है।

जेल की सलाखों के पीछे बंद होकर भी वे मातृभूमि की जयकार करते रहते हैं। चाहे जितनी भी पीड़ा हो वे आजादी का स्वर भूलते नहीं है। स्वार्थ, लोभ और यश कभी उन्हें भटका न सके। ये स्वयं के मन के मालिक हैं जो बलिदान देकर भी संतुष्ट हैं और साम्राज्यवाद की दीवार गिराने को तत्पर ऐसे महानुभाव को मेरा प्रणाम जो बंद सलाखों के अन्दर हैं पर ध्रुव की तरह धीर, वीर और साहसी हैं उन्हें मेरा प्रणाम है।

बंद सीखचों में जो हैं अपने सरनाम,

धीर-वीर उन सत्पुरुषों को कोटि प्रणाम!

उन्हीं कर्मठों, ध्रुव धीरों को है प्रतियाम-

कोटि प्रणाम!

जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं, झूम,

जो हँसते-हँसते सूली को लेते चूम,

दीवारों में चुन जाते हैं जो मासूम,

टेक न तजते, पी जाते हैं विष का धूम!

उस आगत को जो कि अनागत दिव्य भविष्य,

जिसकी पावन ज्वाला में सब पाप हविष्य!

सब स्वतंत्र, सब सुखी, जहाँ पर सुख-विश्राम,

नवयुग के उस नव प्रभात की किरण ललाम!

उस मंगलमय दिन को मेरे कोटि प्रणाम!

सर्वोदय हँस रहा जहाँ सुख-शान्ति प्रकाम!

5. बंद सीखचों.....शान्ति प्रकाम।

देश के सपूत फाँसी के फंदों पर खुशी खुशी झूल जाते हैं। वे चाहे दीवारों में चुन दिए जाएँ पर कभी देश और मानवता की जयकार को नहीं छोड़ते। वे सारे पाप को भस्म करके अज्ञात पर सुनहरे भविष्य के आगमन की सूचना देता है। जहाँ सभी खुश और आराम के साथ रहकर नए युग का सूर्योदय देखें। कवि उस मंगलमय प्रभात का सतत नमन करता है।

अभ्यास :

1. कवि-किन्हें प्रणाम करना चाहता है?
2. देश के सपूतों ने जन-जन में कैसे जागृति पैदा की?
3. श्रेष्ठ पुरुषों के क्या लक्षण हैं?
4. सोहनलाल द्विवेदी जी ने प्रस्तुत कविता में किस स्वर को मुखरित किया है?
5. कवि कैसी सुबह की आशा करता है?

यूनिट - 4

पाठ - 7

रामधारीसिंह 'दिनकर'

श्री दिनकरजी का जन्म संवत् 1965 में हुआ। आपकी कविता में देशव्यापी जागरण का स्वर है। आप आलोकवादी कवि हैं जो अपनी प्रखर प्रतिभा से अन्धकार में भी प्रकाश की किरणें बिखेरकर समाज और मानव-जीवन का कल्याण करते हैं। आपकी कविता जनसाधारण के हृदय में शिव-भावना की सृष्टि करती हैं। आप राष्ट्रीय कवि हैं। विषय की सरसता और भाषा-सौष्ठव की दृष्टि से दिनकरजी ने अपने काव्य को जनता के हृदय में स्थायी स्थान पाने योग्य बना दिया है। अपनी कुछ कविताओं में यह कवि विद्रोही भी नज़र आता है। वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति और आर्थिक व्यवस्था को देखकर कवि हुँकार कर उठता है, परिवर्तन का आह्वान करता है। आपने प्रबन्ध काव्य भी लिखे हैं।

संस्कृति एवं इतिहास के गम्भीर अध्ययन के फलस्वरूप आपने 'संस्कृति के चार अध्याय' ग्रन्थ की रचना की है। आपने साहित्यिक निबन्ध भी लिखे हैं। आप बिहार के सर्वोपरि कवि हैं।

आपकी प्रमुख रचनाएँ ये हैं :- काव्य— रेणुका, हुँकार, रसवंती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, नील, कुसुम, उर्वशी आदि; गद्य— मिट्टी की ओर अर्द्धनारीश्वर, संस्कृति के चार अध्याय आदि।

कुरुक्षेत्र

जब तक स्वार्थ-शैल मानव के

मन का चूर न होगा।

तब तक नर-समाज है असिधर।

प्रहरी दूर न होगा।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' कहते हैं जब तक मनुष्य का स्वार्थ उसका अहंकार खत्म नहीं होगा तब तक पुरुष का वर्चस्व उसका समाज यथावत् बना रहेगा और वे प्रहरी की तरह बने रहेंगे।

नर है विकृत, अतः नरपति

चाहिए धर्म-ध्वज धारी।

राजतंत्र है हेय, इसी से
राजधर्म है भारी।

कवि वर्तमान युग की विसंगतियों के मूल में मनुष्य को मानते हुए उसे विकृत मान रहा है। वह ईश्वर से एक धर्म परायण पुरुष की चाह व्यक्त कर रहा है। राजनीतिक तंत्र हीन है और उसकी जगह राजधर्म की गुरुता का बखान किया है।

“धर्मराज, संयास खोजना
कायरता है मन की,
है सच्चा मनुजत्व ग्रंथियाँ
सुलझाना जीवन की।

कवि धर्मराज युधिष्ठिर को ललकारते हुए कहता है कि हर समय क्षुब्ध रहना परिस्थिति से हार मान लेना है। सच्चा मनुष्य वही है जो अपने जीवन की समस्त गुंथियों को सफलतापूर्वक सुलझा सके हैं।

“दुर्लभ नहींमनुज के हित,
निज वैयक्तिक सुख पाना,
किन्तु कठिन है कोटि-कोटि
मनुजों को खुशी बनाना।

कवि कहता है कि स्वयं के लिए कुछ करके निज सुख पाना बहुत आसान होता है किन्तु करोड़ों मनुष्य को सुखी कर पाना कठिन कार्य है।

एक पंथ है, छोड़ जगत् को
अपने में रम जाओ,
खोजो अपनी मुक्ति और
निज को ही सुखी बनाओ।

खुद को सुखी बनाने का एक ही रास्ता है। स्वयं में रम जाना। एक और आसान तरीका यह है कि पूरे संसार को छोड़ दो। स्वयं अपनी मुक्ति को ढूँढ़कर अपना जीवन सुखी बनाओ। लेकिन यह ‘स्व’ का भाव बहुत संकुचित है।

अपर पथ हैं, ओरो का भी

निज विवेक, बल दे कर,

पहुँचों स्वर्ग-लोक में जग से

साथ बहुत को लेकर।

यह जो रास्ता है जिसपर चलकर

हमें परलोक तक जाना है

वह असीमित है। हमें अपने विवेक और बल के आधार पर बहुत लोगों को एक साथ लेकर उस स्वर्ग लोक में जाना है।

जिस तप से तुम चाह रहे

पाना केवल निज सुख को

कर सकता है दूर वही तप

अमित नरों के दुख को।

जिस मनोभाव से तुम केवल अपने को पाना चाहते हो और पाने के लिए प्रयासरत् हो वहीं तप अन्य तुम्हारे अपनों का दुख हर सकता है।

निज तप रखो चुरा निज हित

बोलो, क्या न्याय यही है?

क्या समष्टि हित मोक्ष दान का

उचित उपाय यही है?

अपने समस्त तपस्याओं को केवल अपने हित के लिए मत रखो, ये उचित नहीं है, बल्कि इन सब का उपयोग सम्पूर्ण मानव जाति के मोक्ष के लिए किया जा सकता है। इसका यह सर्वश्रेष्ठ उपाय है।

निज को ही देखो न युधिष्ठिर

देखो निखिल भुवन को

स्ववत् शान्ति-सुख की ईहा में

निरत, व्यग्र जन-जन को।

कवि युधिष्ठिर को समझाते हुए कहते हैं कि युधिष्ठिर तुम केवल स्वयं को ही न देखो बल्कि इस पूरे संसार को देखो। यहाँ सब कोई सुख और शांति के लिए सतत् प्रयत्नशील है

और यह इच्छा प्रतिफल उन्हें व्यग्र करती है।

माना, इच्छित शान्ति तुम्हारी

तुम्हें मिलेगी वन में

चरण-चिह्न पर कौन छोड़

जाओगे यहाँ भुवन में ?

युधिष्ठिर के पलायन की बात पर कवि कहते हैं कि उसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारे मन की शान्ति तुम्हारे अकेले रहने में है। लेकिन तुम अपनी जगह पर किसे छोड़ेंगे जो तुम्हारा स्थान लेगा। तुम आने वाली पीढ़ी को क्या आदर्श देकर जाओगे ?

धर्मराज, क्या यती भागता

कभी गेह या वन से?

सदा भागता फिरता है वह

एक मात्र जीवन से।

हे धर्मराज युधिष्ठिर क्या कभी संन्यासी घर और वन से भागता है, नहीं, वह तो केवल अपने जीवन और उसके सांसारिक मोह से भागता है।

जीवन उनका नहीं युधिष्ठिर

जो उससे डरते हैं,

वह उनका, जो चरण रोप

निर्भय होकर लड़ते हैं।

जीवन के प्रति सकारात्मक भाव दर्शाते हुए कवि कहते हैं कि जीवन उनका साथ कभी नहीं देता जो उससे डरते हैं। बल्कि जीवन उनके चरणों में रहता है जो उसे निर्भयता के साथ जीते हैं।

यह पयोधि सबका मुख करता

विरत लवणकटु जल से,

देता सुधा उन्हें जो मथते

इसे मन्दराचल से।

(सप्तम सर्ग) कुरुक्षेत्र

यह जो सागर हैं वह सभी को नमकीन जल का पान कराता हैं। लेकिन जो इसका गहराई तक मंथन करता है उसे वह अमृत भी देती हैं। अतः यह जीवन का अनुभव है और उसी जीवन में हमें सुख-दुख का अनुभव हो जाता है।

अभ्यास

प्रश्नों का उत्तर दें :-

1. 'दिनकर राष्ट्रीय कवि के रूप में जाने जाते हैं।' दिनकर का जीवन परिचय देते हुए काव्य की विशेषता बताएँ।
2. कवि ने युधिष्ठिर से किस भाव का परित्याग करने को कहा है?
3. कौन हमें नमकीन जल और अमृत दोनों देता है?

भदंत आनंद कौसल्यायन

1924 लाहोर कॉमी विद्यापीठ से स्नातक उपाधि। महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायनजी के व्यक्तित्व की गहरी छाप पड़ी। 5-2-1928 नायकपाद लुणुपोगुणे धम्मानन्द महास्थविर श्रीलंका से प्रव्रज्या-उपसम्पदा प्राप्त। पालि-बौद्ध धर्म का अध्ययन किया। 1932-34 बौद्ध धर्म प्रचार के उद्देश से इंग्लैंड। सन् 36 में सारनाथ रहकर मासिक 'धर्मदूत' का संपादन कार्य किया। मूल पालि भाषा के त्रिपिटक ग्रंथ जातक 6 खण्ड, अंगुत्तरनिकाय चार भाग, महावंश तथा अभिधम्मत्थ संझ्हो आदि का अनुवाद हिन्दी में किया। सन् 1941 से 51 तक हिन्दी राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के प्रथम प्रधानमंत्री। मलेशिया के पिन्नांग एवं बैंकाक में बैठकर The Buddha and His Dhamma का हिन्दी अनुवाद किया।

56 में वे एक अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध भिक्षुओं का प्रतिनिधि मंडल लेकर चीन गये। 1959 से 68 तक श्रीलंका के विद्यालंकार विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष का पद विभूषित किया।

पालि-हिन्दी शब्दकोष पर उत्तरप्रदेश सरकार ने 'मानपत्र' से, नवनालन्दा महाविहार (बिहार) 31-10-1971 ने 'विद्यावारिधि' (डी.लिट्) तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने उनकी अमूल्य हिन्दी सेवा के उपलक्ष्य में सम्मानार्थ 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि देकर ताम्रपट प्रदान किया।

1968-81 तक दीक्षाभूमि में रहकर छह वर्ष तक पाक्षिक 'दीक्षाभूमि' का प्रकाशन संपादन किया।

5-1-1985 में बौद्ध प्रशिक्षण संस्थान, बुद्धभूमि अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध केन्द्र का परम पावन दलाई लामा के हस्ते अनावरण कराया।

वे अखिल भारतीय भिक्षु संघ के 10 साल तक संघानुशासक रहे। महाप्रयाण : 22 जून 1988.

ये सुइयाँ

‘छोटी-बड़ी सुइयाँ रे, जाली का मोरा कातना’ मुझे याद है कि एक समय यह गीत शोहदा स्वभाव तरुणों की जबान पर चढ़ा हुआ था। हाँ, तो मैं गीत की उन छोटी-मोटी सुइयों की बात कहने जा रहा हूँ, जो किसी गरीब अथवा अमीर का कपड़ा नहीं सीती, किंतु गरीब-अमीर सभी के बदन को बंधती हैं।

बात सन् 1937 की है। मैं चटगाँव में था चातुर्मास के तीन-चार महीने व्यतीत करना चाहता था। चटगाँव प्रवेश करते ही मुझे मलेरिया हो गया। चटगाँव भारत का एक मात्र बौद्ध-भूखंड है। मैं वहाँ का आदृत अतिथि था। जिस किसी गाँव में जाता तो देखता कि आधे से ज्यादा लोग बीमार हैं।

इधर बारह-तेरह वर्षों से डाक्टर सुइयों का यानी इंजेक्शनों का बहुत प्रयोग करने लगे हैं। डाक्टर ने कुनीन का इंजेक्शन कंधे के नीचे पीठ में दे दिया। मेरा बुखार तो उतर गया परन्तु पीठ सूज गई।

हरिद्वार कुम्भ-के अवसर पर सेठ गोविन्ददास ने अपने गो-सेवा-सम्मेलन के सिलसिले में हरिद्वार चलने का आग्रह किया। सरकारी नियम था कि हैजे का टीका लेना पड़ेगा। सेठ गोविन्ददास जी की कृपा से उनके घर पर ही एक डाक्टर ने हैजे का टीका लगा दिया था।

हरिद्वार से लौटे कि लंका से विश्व बौद्ध-सम्मेलन में सम्मिलित होने का निमंत्रण मिला। वहाँ भारत से जो कोई भी जाता है उसे चेचक का टीका लगवाना पड़ता है। इसी संदर्भ में मुझे पुरानी बात याद आ रही है जब इंग्लैंड जाने के सिलसिले में लंका पहुँचा।

मुझे टीका लगवाने कोरा-टीन ऑफिस जाना पड़ा। मैं टीका लगवाने के हक में न था। इतने में डाक्टर ने कहा—“मैं आपसे एक बात कहता हूँ, आप बौद्धों के सम्मानित व्यक्ति हैं। मैं ईसाई डाक्टर हूँ। भीड़ में आपके साथ कुछ करूँगा तो कल पत्रों में छपेगा कि एक ईसाई डॉक्टर ने बौद्ध भिक्षु को हैरान किया। क्या आप चाहते हैं कि आपके इस आचरण के कारण देश में साम्प्रदायिक भावना पैदा हो।”

कंपाउण्डर ने हाथ पर एक टीका लगा दिया।

इस बार भी लंका पहुँचकर चेचक और कॉलरा का टीका लगवाना पड़ा।

मलाबार-हिल, बम्बई का अनुभव याद आ रहा है - श्री कन्हैयालाल मुँशी के यहाँ ठहरा

था। कर्मवीर के संपादक माखनलाल चतुर्वेदी वहाँ थे। उनके साथ सोलह-सत्रह वर्ष का तरुण था। डॉक्टर ने उसको पैर का आपरेशन कर दिया और दर्द कम करने के लिए इंजेक्शन लगा रहा था।

लेखक भदन्त इन डॉक्टरों के इंजेक्शन से इतना घबराते हैं कि उन्हें लाइसेंस प्राप्त हत्यारा कहते हैं।

अभ्यास

1. प्रस्तुत पाठ में लेखक ने किनकी बात की है जिनका श्रद्धा के बगैर कोई महत्व नहीं है?
2. सन् 1937 में लेखक के साथ क्या हुआ?
3. लंका से किसे क्या निमंत्रण मिला?
4. 'कर्मवीर' के संपादक कौन थे?
5. 'मालाबार हिल' कहाँ स्थित है? लेखक को वहाँ क्या अनुभव मिला?

पाठ - 9

रुचि

बालकृष्ण भट्ट

कोई काम हो उमदा तरह का कभी नहीं होगा, जब तक उस काम में रुचि न हो। गीता में भगवान कृष्णचन्द्र ने कहा भी है -

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।

असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह।।

बिना श्रद्धा अर्थात् रुचि के जप, तप, दान, हवन आदि जो किया जाता है, सब व्यर्थ है - करना न करना दोनों एक-सा है; न परलोक में उसका कुछ फल मिलता है, न इसी लोक में काम की कोई तारीफ करता है। शास्त्र वालों ने विधिपूर्वक या विधिवत् पर बड़ा जोर दिया है। सच पूछो तो रुचि या श्रद्धा किसी काम का करना ही विधि है; क्योंकि विधि तभी हो सकती है जब मन में हमारे उस काम की ओर रुचि है। ध्यान जमा कर देखिए तो मनुष्य जन्मते ही रुचि में दखल देने लगता है, मानो रुचि उसकी दासी या जरखरीद लौड़ी हो; बच्चे को माँ के दूध के

एवज में गाय या बकरी का दूध शीशी या रुई के फाहे में दिया जाता है तो वह उसको ऐसी रुचि से नहीं पीता, जैसा माँ का दूध। ऐसे ही माँ की गोद के बदले उसे पालने या चारपाई पर सुला दो, तो कदाचित् दस में दो-एक ऐसे होंगे, जिनको बिना रोये-गाये खुशी से उम पर लेटे रहना रुचेगा। फिर ज्यों-ज्यों उमर में वह बढ़ता जाता है, अपने हर काम, खाना, पीना, सोना, ओढ़ना, पहिनना, खेल-कूद, पढ़ना-लिखना आदि में रुचि को जगह देता जाता है।

रुचि ही के जुदे-जुदे प्रकारांतर या उसकी बारीकियाँ फैशन के नाम से चल पड़े हैं, इस नयी सभ्यता के जमाने में जिमकी हद में जियादत छानबीन हो रही है। फ्रांस और इंग्लैण्ड मरीखे मालदार मुसभ्य देशों में जिसकी यहाँ तक उन्नति है कि सुनते हैं, इंग्लैण्ड में अमीर घरानों की लेड़ियों के लिए दिन में तीन बार पेरिस से उनके पोशाक आदि वेश-भूषा का नमूना आया करता है। वैसा ही हमलोग भी अपने खाने-पीने में रुचि की बारीकियों को बेहद बढ़ाये हुए हैं। कोई कहते हैं, हम नहीं जानते लोगों को रोटी खाना कैसे पसंद आता है; हमको तो दोनों जून ताजी-ताजी लुचुई और बेढ़नी मिलती जाय तो कभी कच्ची रसोई का नाम न लें। दूसरे कहते हैं, तुम्हारी भी क्या ही रुचि है? लुचुई-सी सकील चीज तुम्हें कैसे रुचती है; अजी, कहीं बिना कच्ची रसोई खाये जी भरता है। हमारे हिन्दुतान में कच्ची रसोई का तरीका ऐसा बढ़िया रखा गया है कि अगर तकल्लुफ को मौका दिया जाय तो हकीकत में रसोई रसायन हो जाती है। एक तीसरे बोल उठे, यह तो अपनी-अपनी रुचि की बात है। पर मेरी राय तो यह है कि मुसलमान बहुत अच्छा पकाते हैं, खुसूसन गोश्त की किस्में। इस पर कोई कंठीबंद वहाँ पर बैठे थे, बोल उठे— हरे हरे, तुम्हारी रुचि कैसी है, हम नहीं कह सकते। हमको गोपाल मंदिर की खुशबूदार बसौंधी, मोहन-थाल और दूसरे-दूसरे छप्पन प्रकार के भोग का महाप्रसाद मालूम होता है, कभी आँख में नहीं देखा, नहीं तो मुसलमानों के भोजन को कभी न सराहते?

ऐसे ही पेय वस्तु में भी रुचि आ टाँग अड़ाती है। पीना हम उसे कहेंगे जो बिना दाँतों की सहायता के केवल जीभ और तालू द्वारा हलक के भीतर जाता है, परन्तु रस के ज्ञान में रसना अर्थात् जीभ का अधिक सम्बन्ध है तो वहाँ रुचि की सलाह ली जाती है। पेय पदार्थों में सबसे पहले पानी है, जिनको वैद्यक वाले यों तो कहते हैं — शरत् और वसन्त ऋतु को छोड़ और महीनों में नदी का पानी पीने योग्य है—

पानीयं पानीयं शरदि वसन्ते च पानीयम्।

नादेयं नादेयं शरदि वसन्ते च नादेयम्।।

कोई कहता है, ह तो सदा ताजा पानी पीते हैं और इसके सैकड़ों फायदे बतलाता है। दूसरे कहते हैं, हम तो जाड़े में भी ठंडा पानी पीते हैं और गर्मियों में तो बिना बर्फ के प्यास बुझती ही नहीं। इतने में एक अंग्रेजी पढ़े वहाँ बैठे थे, बोले-आपको मालूम नहीं, कितने निहायत बारीक कीड़े पानी में रहते हैं। इसलिए इसे छान लेना बहुत जरूरी है। लिखा है :

वस्त्रपूतम् पिवेज्जलम्।

मैंने तो एक फिल्टर खरीदा है, उसी में छान बिलौर ग्लास में पानी पीता हूँ। बर्फ के साथ शीशे के ग्लास में पानी रखकर पीने में बड़ा मजा मिलता है। इतने में एक चौथे साहब बोल उठे— हमको यह सब खटराग मालूम होता है। यहां तो खरा खेल फर्खाबादी पसन्द आता है। प्यास ने सताया तो दो आने फेंक दिए, सोडावाटर का बोतल मुँह में लगाया, घट्ट-घट्ट उतार गये, कलेजा तर हो गया। इतने में पाँचवें साहब, जो वहाँ मौजूद थे, कहने लगे— हे भगवान्! धम्म के अब तुम्हीं रक्षक हो। न जानिए कैसा समय आया है कि अंग्रेजी पढ़-पढ़ लोग भ्रष्ट हो जाते हैं। अपने तो कैसी ही प्यास लगी हो बिना चरणोदक मिलाये जल कभी नहीं पीते।

अब सोने को लीजिए। पसेरियों खटमल से लदी हुई टूटी खाट से ले उम्दा पलंग, ईजी-चेयर और कोच तक न जानिए कितने खटराग रचे गये हैं। सो सब इस रुचि ही के भाँति-भाँति के ईजाद हैं। इतने पर भी नींद का झोका आता है तब वह रुचि यहाँ तक बेहया बन जाती है कि कंकड़ पर भी सोइए तो मखमली कोच का मजा मिलता है।

‘निद्रातुराणां न च भूमिशय्या’

ऐसे भी जिद्दी सोने वाले मनहूस पाये जाते हैं कि चलते चलते सोते हैं, खाते-खाते सोते हैं, बातचीत करने में एक बात मुँह से निकली तो दूसरे में अन्तर्धान हो गये।

अब पहनावे को ही लीजिए। लोग कहते हैं, यहाँ लोग भद्दे हैं, फैशन नहीं जानते। पर यहाँ ग्रन्थ के ग्रन्थ नख-शिख सोलह सिंगार के ऊपर लिखे गये हैं। यहाँ के अनगिनत किस्म के पोशाक और आभूषण-जुदी-जुदी रुचि के अनुकूल गिनने लगे तो घड़ी दो घड़ी न चाहिए, वरन् दिन का दिन, समाप्त हो जाय। तो अब देर तक पढ़ने वालों को इस रुचि के भँवर-जाल में फँसाये रखना और किसी दूसरे लेख के पढ़ने से वंचित रखना है, इसलिए इस सियापे को अब बन्द कर छोड़ते हैं। पढ़ने वालों की रुचि के अनुकूल फिर कभी निकालेंगे।

अभ्यास

प्रश्नों के उत्तर दें :-

1. लेखक ने किस कार्य को व्यर्थ कहा है?
2. इंग्लैंड के अमीर घरानों में क्या होता था?
3. किन ऋतुओं में नदी का पानी पीने योग्य होता है?
4. निद्रा की व्याख्या लेखक ने किस प्रकार की है?
5. रुचिकला प्रश्न इस पनने पर ले आइए।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :-

1. निद्रातुराणां न च ----- ।
2. ----- हुतं दत्तं ----- कृतं च ----- ।
3. पानीयं ----- शरदि ----- च ----- ।
4. वस्त्रपूतम् ----- ।

पाठ — 10

देश-विदेश के स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। संसार का प्रत्येक प्राणी स्वतंत्र रहना चाहता है। किंतु इतिहास साक्षी है कि समय-समय पर एक देश ने दूसरे देश को गुलाम बनाया। हमारा देश भारत भी लगभग दो सौ वर्षों तक अंग्रेजों के अधीन रहा।

15 अगस्त सन् 1947 को हमारा देश आज़ाद हुआ। 15 अगस्त के दिन लाल किले की शोभा देखते ही बनती है। प्रातःकाल यहाँ देश के प्रधान मंत्री झंडारोहण करते हैं और देशवासियों को संबोधित करते हैं।

हमारे देश की तरह विश्व के कई देशों में भी अपने-अपने स्वतंत्रता दिवस बड़े धूमधाम से मनाए जाते हैं।

अमरीका का स्वतंत्रता दिवस 4 जुलाई को मनाया जाता है। सन् 1776 में अमरीका को ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिली। इस अवसर पर सैनिक बैंड-बाजों के साथ परेड होती है सैनिक राष्ट्रध्वज लेकर शान से परेड में भाग लेते हैं। अमरीका के राष्ट्रध्वज की तरह पट्टियाँ यहाँ की तरह ब्रिटिश नगरियों तथा तारे पचास राज्यों के प्रतीक हैं।

बंगलादेश का स्वतंत्रता दिवस 16 दिसंबर को मनाया जाता है। भारत की आजादी से पहले यह क्षेत्र बंगाल राज्य का अंग था। सन् 1905 में इसे जातिगत आधार पर बांटा गया। सन् 1911 में पुनः एकीकृत हुआ। सन् 1947 के विभाजन में इसे पुनः विभक्त किया गया। पश्चिम बंगाल भारत को और पूर्वी बंगाल पाकिस्तान को मिला। सन् 1971 में जनता ने विद्रोह किया और बंगलादेश को स्वतंत्र कराया।

भूटान गणराज्य है। यह अपना स्वतंत्रता दिवस 8 अगस्त को बड़ी उमंग के साथ मनाते हैं।

बोलीविया गणराज्य है जहाँ स्वतंत्रता दिवस 6 अगस्त को मनाया जाता है। प्रारंभ में यहाँ इंडा साम्राज्य था। इस देश का नाम दक्षिण अमरीका के स्वतंत्रता सेनानी साइमन बोलिवर के नाम पर रखा गया। 16 वीं शताब्दी में स्पेनियों ने इसे जीत लिया सन् 1825 में एक लम्बे अर्से के बाद स्वतंत्रता मिली।

फ्रांस में प्रतिवर्ष 13 जुलाई की रात मशाल जुलूस निकालते हैं क्योंकि फ्रांस के लोग अपने राजा की नीतियों से परेशान थे। उन्हें भूखे रहकर भी राजकोष में धन जमा करना पड़ता था। जो ऐसा नहीं करता उसे काल-कोठरी में बंद कर दिया जाता था। यह काल कोठरी 'बेस्टील' के नाम से जानी जाती थी। इससे तंग आकर 14 जुलाई सन् 1789 को किले और कारागार पर हमला बोल दिया। सभी बंदी आजाद हो गए। इसी से फ्रांस में इसे 'बेस्टील दिवस' कहा जाता है।

आस्ट्रेलियावासी अपने देश का स्थापना दिवस जनवरी के अंतिम सप्ताह में आनेवाले सोमवार को मनाते हैं।

न्यूजीलैंड में स्वतंत्रता दिवस 'वेतांगी दिवस' के नाम पर 6 जनवरी को मनाया जाता है। इस अवसर पर माओरी लोग बड़ी-बड़ी नौकाओं में बैठ अपने पूर्वजों की वीरता के गीत गाते हैं। सामूहिक दावतें, नृत्य-संगीत के साथ यह दिन मनाया जाता है।

अभ्यास

प्रश्नों के उत्तर दें :-

1. भारत कब आजाद हुआ? हम इसे कैसे मनाते हैं?
2. अमरीका कब स्वतंत्र हुआ?
3. अमरीका का राष्ट्रध्वज कैसा है?
4. प्रस्तुत पाठ में वर्णित स्वतंत्रता दिवस के बारे में संक्षेप में लिखें।
5. न्यूजीलैंड के स्वतंत्रता दिवस को क्या कहा जाता है?

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :-

1. -----को हमारा देश आजाद हुआ।
2. अमरिका का -----4 जुलाई को मनाया जाता है।
3. बंगला देश का स्वतंत्रता दिवस -----को मनाया जाता है।
4. प्रारंभ में यहाँ -----था।

भारत में बेरोजगारी की समस्या

रूपरेखा

1. प्रस्तावना — मानव-जीवन का अभिशाप बेरोजगारी
2. बेरोजगारी के विभिन्न रूप
3. बेरोजगारी से होने वाली हानियाँ
4. बेरोजगारी के कारण-जनसंख्या वृद्धि, दोषपूर्ण शिक्षा-प्रणाली, कृषि और उद्योगों का अल्पविकास
5. बेरोजगारी निवारण के उपाय : जनसंख्या नियंत्रण, छोटे उद्योगों को प्रोत्साहन, शिक्षा में सुधार, औद्योगीकरण
6. उपसंहार

इक्कीसवीं सदी की ओर अग्रसर विज्ञानी मानव अनेक अभिशापों से ग्रसित है। बेरोजगारी उनमें से एक भयंकर अभिशाप है। वर्तमान आर्थिक युग में जीविकोपार्जन ही मनुष्य के जीवन का लक्ष्य रह गया है। किसी देश में कम से कम बेरोजगारों का होना वहाँ की आर्थिक प्रगति और विकास का परिचायक होता है। जब जनसंख्या की वृद्धि आर्थिक विकास वृद्धि से अधिक हो जाती है, तब बेरोजगारी का उदय होता है। बेरोजगारी का अर्थ काम के अवसरों की कमी है।

बेरोजगारी के विभिन्न रूप — वैसे तो बेरोजगारी एक विश्वव्यापी समस्या है। संसार के प्रत्येक राष्ट्र इसकी चपेट में आ चुके हैं किन्तु आर्थिक रूप से कमजोर देशों में यह समस्या अपेक्षाकृत अधिक है। भारत में प्रायः इसके तीन रूप पाये जाते हैं —

- (क) ग्रामीण संबंधी बेकारी — किसान और खेतिहर मजदूरों की वर्ष में छः माह से अधिक की बेकारी इसी श्रेणी के अंतर्गत आती है।
- (ख) औद्योगिक बेकारी — निर्धनता के कारण कारखानों में अकुशल मजदूरों की भीड़ इसी कोटि की है।
- (ग) शिक्षित बेकारी — वर्तमान में देश के शिक्षित समुदाय में व्याप्त बेकारी इसी तरह की है।

बेरोजगारी से होने वाली हानियाँ — बेरोजगारी से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी की हानि होती है। जिस राष्ट्र में जितनी बेरोजगारी होगी वह राष्ट्र उतना ही आर्थिक रूप से पिछड़ा माना जाएगा। बेरोजगार व्यक्ति को अपना जीवन भार स्वरूप लगता है। बेकारी व्यक्ति के मानवीय गुणों में धब्बा लगा देती है। वह आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, धैर्य, सहिष्णुता, औदार्य आदि मानवीय गुणों से वंचित हो जाता है। बेकारी के कारण उसके मस्तिष्क तोड़-फोड़ और समाज विरोधी गतिविधियाँ जन्म लेने लगती हैं। व्यक्ति कुंठित हो जाता है जिससे आर्थिक ढाँचा लड़खड़ाने लगता है और राष्ट्रीय प्रगति में बाधा आती है।

बेरोजगारी के कारण — प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से बेरोजगारी के अनेक कारण हैं। इनमें कुछ प्रशासनिक हैं, कुछ प्राकृतिक और कुछ सामाजिक हैं। इसके मुख्य कारण निम्नांकित हैं — (1). जनसंख्या की अप्रत्याशित वृद्धि। (2) दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली। (3) कुटीर तथा लघु उद्योगों की दुर्बलवस्था। (4) प्राकृतिक संपदा और साधनों का अनुपयोग। (5) व्यापार तथा उद्योगों के प्रति नयी पीढ़ी की उदासीनता। (6) शारीरिक श्रम के प्रति गलत दृष्टिकोण। (7) औद्योगिक विकास की पर्याप्त कमी। (8) मानसिक शक्ति-नियोजन का अभाव।

बेरोजगारी निवारण के उपाय — मूलरूप से बेकारी दूर करने के लिए अधोलिखित उपाय हो सकते हैं — (क) जनसंख्या वृद्धि पर कड़ा नियंत्रण, (ख) कुटीर तथा लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देना, (ग) औद्योगीकरण, (घ) शिक्षा प्रणाली में मूलभूत परिवर्तन, (ङ) श्रम की प्रतिष्ठा और शारीरिक श्रम का सम्मान, (च) सहकारिता को प्रोत्साहन।

सरकार द्वारा चलायी जा रही पंचवर्षीय योजनाओं ने इस क्षेत्र में काफी काय किया है। भारत से बेरोजगारी दूर करने के लिए निम्न सुझाव उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं —

- (1) प्रभावी परिवार-नियोजन द्वारा जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण स्थापित किया जाये।
- (2) शिक्षा को व्यावहारिक और व्यवसाय केंद्रित (Job oriented) बनाया जाये।
- (3) कुटीर उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन दिया जाये।
- (4) प्राकृतिक साधनों का भरपूर उपयोग करके देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जाये।
- (5) ग्रामीण जीवन की समस्याओं का समाधान करके वहाँ ऐसा वातावरण उत्पन्न किया जाये। ग्रामीण जनसंख्या वहीं खप सके तथा शहरों पर बोझ न बनने पाये।
- (6) रोजगार कार्यालय में अधिक प्रभावशाली और निष्पक्ष ढंग से कार्य संपन्न होना चाहिए।
- (7) किसानों को कम ब्याज दरों पर आर्थिक सहायता प्रदान की जाये।

(8) बंद पड़ी हुई सूती व जूट मिलों को चलाने के लिए अलग-अलग निगम बनाये जायें।

उपसंहार — किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सबसे बड़ा बाधक वहाँ की बेरोजगारी है। व्यक्ति जब तक अपनी रुचि, योग्यता, अनुभव और शिक्षा के अनुकूल कार्य करने की सुविधा नहीं पाता तब तक राष्ट्र की आर्थिक स्वाधीनता मात्र स्वप्न ही रहती है। बेरोजगार युवक देश के लिए विनाशकारी, अनुशासनहीन, विद्रोही और क्रांतिकारी बन जाते हैं। इसलिए राष्ट्र का सर्वप्रथम कर्तव्य बेरोजगारी दूर करना और जन-सामान्य को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदत्त करना होता है।

अभ्यास

प्रश्नों के उत्तर दें :

1. बेरोजगारी किसे कहते हैं?
2. बेरोजगारी के विभिन्न रूप क्या हैं?
3. उन कारणों का उल्लेख करें, जिनसे बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न होती है?
4. बेरोजगारी निवारण के उपाय बताएँ।

उपन्यासकार का परिचय

प्रेमचंद का घरेलु नाम धनपतराय था। आपका जन्म लमही गाँव, जिला बनारस में हुआ। बहुत परिश्रम करके आपने स्कूली शिक्षा पूरी की। अध्यापन का कार्य करके बी. ए. पास कर शिक्षा विभाग में डिप्टी-इंस्पेक्टर हो गए। असहयोग आंदोलन में आपने सरकारी नौकरी छोड़ दी। और स्वतंत्र लेखन से जुड़ गए। आप कथा और उपन्यास सम्राट माने जाते हैं।

‘निर्मला उपन्यास दहेज के अभाव में बेमेल विवाह की बलिवेदी पर चढ़ाई जानेवाली निर्मला की करुण कहानी है। इस उपन्यास में नारी की व्यथा है।

उपन्यास का सारांश (1)

निर्मला शहर के जाने-माने वकील उदय भानुलाल की बेटी थी। उसकी माँ का नाम कल्याणी था। निर्मला के दो भाई और एक बहन थी।

उदयभानुलाल के दो बेटियाँ एवं दो बेटे थे। उदयभानु ने अपनी बड़ी बेटी निर्मला का रिश्ता भालचंद्र के बेटे भुवनमोहन से तय किया था। किन्तु भालचंद्र एवं उनका बेटा दोनों से पैसे के भूखे थे, भालचंद्र उदयभानु को बड़ा रईस मानते थे। किन्तु जब बदमाश मतई के हाथों उदयभानुलाल की मृत्यु हो गई तब उसे उदयभानु के घरवालों की दयनीय स्थिति का पता चला और वह तुरंत रिश्ता तोड़ दिया। निर्मला की माँ कल्याणी को मजबूर होकर चालीस साल की उम्र के स्थूलकाय तीन बच्चों के बाप के साथ निर्मला को ब्याहना पड़ा।

निर्मला उस बेमेल विवाह से बिल्कुल खुश नहीं थी। अपने पति पर करुणा कर उसने अपना शरीर उन्हें समर्पित किया। निर्मला अपने मौतेले बड़े बेटे से अंग्रेजी सीखना चाहती थी किन्तु उनके रिश्ते को लेकर तोताराम के मन में शक उत्पन्न हो गया। इस कारण मंसाराम के मन को बहुत ठेस लगी और बीमार पड़ गया। तोताराम को जब अपनी गलती का पता चला तो बहुत देर हो चुकी थी। मंसाराम मृत्यु का ग्रास बन गया था।

पाठ — 13

निर्मला

भाग — 2

निर्मला का एक डाक्टर और उनकी पत्नी से परिचय हुआ जिन्होंने मंसाराम की दवा की थी। सुधा डॉक्टर की पत्नी थी। डॉक्टर वही भुवनमोहन था जिसने निर्मला के रिश्ते को दहेज के कारण टुकराया था। सुधा को जब इस बात का पता चला तो वह उसने पति को बहुत गालियाँ दीं। निर्मला ने अपनी छोटी बहन कृष्णा की शादी सुधा के देवर से करा दी।

निर्मला जीवन से ऊब गई थी। तोताराम सन्यासी के समान जीवन बिताने लगा। निर्मला रोज़ सुधा के घर जाती। एक दिन सुधा घर पर नहीं थी। डाक्टर भुवनमोहन ने इस अकेलेपन का फायदा उठाना चाहा। निर्मला ये सब सहन न कर सकी और उसने सुधा को सब कुछ बता दिया। सुधा ने अपने पति की खूब खबर ली। अपमान से पीड़ित डॉक्टर सिन्हा ने ज़हर खा लिया।

निर्मला के जीवन में अब कुछ बचा नहीं था। वह मौत का इंतज़ार करने लगी। तीन दिन तक निर्मला की आँखों से आँसू बहते रहे और चौथे दिन उसकी इहलीला समाप्त हो गई। लाश को कौन दाह करेगा, यह प्रश्न सबके सामने था। लोग इसी चिंता में थे कि एक बूढ़ा पथिक बकुचा लटकाए आकर खड़ा हो गया। वह मुंशी तोताराम थे।

अभ्यास

प्रश्नों के उत्तर दें :-

1. मुंशी प्रेमचंद का परिचय दें।
2. निर्मला कौन थी? उसके माता पिता का नाम क्या था?
3. निर्मला का विवाह किससे हुआ ?
4. निर्मला की छोटी बहन का विवाह किससे हुआ ?
5. सुधा कौन थी?
6. निर्मला का आपने जीवन के प्रति क्या रुख था?
7. निर्मला की चारित्रिक विशेषताएँ लिखें।

छोटा जादूगर

कार्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था। मैं खड़ा था उस छोटे फव्वारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीनेवालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुरते के ऊपर से एक मोटी-सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकर्षित हुआ। मैंने उससे पूछा, “क्यों जी, तुमने इसमें क्या देखा?”

“मैंने सब देखा है! यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौने पर निशाना लगाते हैं। तीर से नंबर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिल्कुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ।” उसने बड़े विश्वास से कहा। उसकी वाणी में कहीं बनावट न थी।

मैंने पूछा, “और उस परदे के पीछे क्या है? वहाँ तुम गए थे?”

“नहीं, वहाँ मैं न जा सका। टिकट लगता है।” मैंने कहा, “तो चलो, मैं तुम्हें वहाँ ले चलता हूँ।”

राह में मैंने उससे पूछा, “तुम्हारे घर में कौन-कौन है?”

“माँ और बाबू जी। बाबू जी देश की खातिर जेल में हैं और माँ बीमार हैं। लोगों को तमाशा दिखाकर मैं माँ की दवा करता हूँ और अपना पेट भी भरता हूँ।”

वह पक्का निशानेबाज़ था। खेल खेलते समय उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखनेवाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया। “बाबू जी, आपको तमाशा दिखाऊँगा,” इतना कहकर वह नौ दो ग्यारह हो गया। मैं घूमकर आया तो किसी ने अकस्मात हिंडोले से पुकारा, “बाबू जी!” मैंने पूछा, “कौन है?” “मैं हूँ छोटा जादूगर।”

हाथ में चारखाने की खादी का झोला, साफ़ जाँघिया और आधी बाहों का कुरता, सिर पर मैला रुमाल सूत की रस्सी से बँधा था। मस्तानी चाल में झूमता हुआ कहने लगा, “बाबू जी नमस्ते। आज कहिए तो खेल दिखाऊँ?”

तभी मेरी श्रीमती जी ने कहा, “दिखलाओ जी, भला कुछ मन तो बहले।”

मैंने कहा, “लड़के!”

“छोटा जादूगर कहिए, यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।” वह नमस्कार करके चला गया।

फिर एक दिन मैंने उसे एक झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाले खड़े देखा। पूछने पर उसने उत्तर दिया, “माँ को अस्पताल वालों ने निकाल दिया।” झोंपड़ी में देखा तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी। छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा, “माँ!” मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, “आज खेल जमा नहीं?” उसने अविचल भाव से उत्तर दिया, “माँ ने कहा कि आज तुरंत चले आना। मेरी घड़ी समीप है।” मैंने क्रोध से कहा, “तब भी तुम खेल दिखाने चले आए।”

उसने कहा, “न क्यों आता!”

मोटर में बैठाकर मैं तुरंत उसे उसकी झोंपड़ी की ओर ले गया। उसके अंदर पहुँचते ही माँ के मुँह से “बे...” निकलकर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गए। जादूगर उससे लिपटकर रोने लगा। उस उज्ज्वल धूप में पूरा संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।

अभ्यास

प्रश्नों के उत्तर दें :-

1. छोटा जादूगर अपनी जीविका किस प्रकार चलाता था?
2. छोटे जादूगर के परिवार में उसके अतिरिक्त और कौन-कौन सदस्य थे?
3. “आज खेल जमा नहीं” जादूगर का खेल क्यों नहीं जमा?
4. घर में कौन बीमार था?

2. वाक्य पूरा करें :-

क. छोटा जादूगर कहिए -----।

ख. “माँ!” मेरी आँखों से -----।

ग. उसके -----हाथ उठकर गिर गए।

पाठ — 15

जैनेन्द्र कुमार

हिन्दी कथा-साहित्य में प्रेमचंद के बाद जैनेन्द्र कुमार का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म सन् 1905 ई. में अलीगढ़ ज़िले के कौड़ियागंज कस्बे में हुआ था। जैनेन्द्र कुमार की स्कूली शिक्षा हस्तिनापुर के जैन गुरुकुल में हुई। वे उच्च शिक्षा के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय गए लेकिन सन् 1921 में महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होकर उन्होंने अपनी शिक्षा अधूरी छोड़ दी और आन्दोलन में शामिल हो गए। जैनेन्द्र के चिंतन और साहित्य पर गांधीजी के सिद्धांतों का बहुत प्रभाव पड़ा। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, तथा उत्तर प्रदेश सरकार का 'भारत-भारती' पुरस्कार मिले तथा भारत सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' की उपाधि से भी सम्मानित किया। जैनेन्द्र का निधन सन् 1990 में हुआ।

जैनेन्द्र कुमार की कहानियों में मानव-मन का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। उन्हें हिन्दी में मनोवैज्ञानिक कहानियों के आरम्भ का श्रेय प्राप्त है। जैनेन्द्र जी की कहानियाँ सोद्देश्य होती हैं जिनमें प्रायः छोटे-छोटे संवादों, सूक्तियों और व्यंजनापूर्ण वाक्यों द्वारा चरित्रों और कथावस्तु को उभारा जाता है। इनकी भाषा बड़ी सटीक और सजीव होती है।

जैनेन्द्र जी की कहानियों के अनेक संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें प्रमुख हैं — वातायन, एक रात, दो चिड़ियाँ, फाँसी, नीलम देश की राजकन्या, ध्रुवयात्रा आदि। इनके अतिरिक्त उनके प्रमुख उपन्यास हैं — परख, अनामस्वामी, त्यागपत्र, सुनीता, कल्याणी, जयवर्द्धन, मुक्तिबोध आदि।

इनाम

कस्बे के हाईस्कूल के अहाते में लड़के इधर से उधर घूम रहे हैं। चहल-पहल है; उत्साह है; क्योंकि नतीजा निकलने वाला है। देर सही नहीं जा रही है; और कमरे के अन्दर बन्द बैठे, बड़े मास्टर लोग मानो खासकर देर इसी लिये लगा रहे हैं। आखिर नतीजा निकला। चपरासी के लिए मुश्किल हुई कि वह कागज की बोर्ड पर चिपका सके। छीन-झपट, खींच-तान से पता चला चपरासी बचेगा कि नहीं, लेकिन चपरासी की मौत न आयी और कागज भी साबित रहा। लड़के नतीजा देखते, जरा गौर से देखते, देखकर फिर लौट जाते। ऐसे क्रमशः हल्ला-गुल्ला कम हुआ। और तब अलग-अलग-सा एक लड़का, कठिनाई से दस वर्ष का होगा, धीमे

से आगे बढ़ा और बोर्ड के सामने आ खड़ा हुआ। उसने स्थिरता से कागज देखा, अपने नाम के आगे मार्क्स देखने के साथ उसने आस-पास के नाम देखे। वह कुछ देर मानो वहाँ जमा खड़ा रहा, फिर हटा, और धीमी चाल से चल दिया।

उसका नाम धनंजय है, इस नतीजे में आठवें में आ गया और सातवें में अब्बल आया है।

घर आकर कहा—‘अम्मा, मैं पास हो गया हूँ।’

उसकी माँ काम में लगी थी, वह अनमनी रहती है। एक बार तो उसने सुना नहीं। हठात् अपने उत्साह को उठाते हुए धनंजय ने कहा—‘हाँ माँ, और अब्बल हूँ अपने सारे क्लास में।’

पर माँ में उत्साह न था। उसने कहा—‘अच्छा’ और अपने हाथ काम से वह खींच न सकी। धनंजय ठिठका-सा ही रहा जैसे उसका अब्बल आना सही न हो, या उस पर खुश होना गलत हो।

सहसा कुछ याद करके माँ ने कहा—‘तो ले कुछ खा ले, सबेरे ही चला गया, बिना कुछ खाये-पीये, सुना ही नहीं। हाँ, तो अब आया है नौ बजे !’

धनंजय ने पूछा—‘पिताजी गये ?’

‘मैं क्या जानूँ, गये होंगे।’

धनंजय उत्तर के स्वरूप पर त्रस्त होने लगा, लेकिन फर्स्ट आना छोटी बात न थी; बोला जल्दी चले गये आज ! मैं तो आया था कि...

माँ ने कहा—‘हाँ-हाँ, निहाल करके रख देते वह तो; ले बैठ।’

धनंजय को बात समझ में न आई, पर आये रोज यह देखता है और समझने की चेष्टा छोड़ चुका है। ऐसे अनसमझे ही समझदार होता जा रहा है। माँ की झिड़की पर चुपचाप ही बैठा और, जो उसके सामने खाने को रख दिया गया, खाने लगा; खाते-खाते हठात् वह अन्यमनस्क हो आया। दर्जे में पहले नम्बर आना और कुल दस वर्ष की अवस्था में आठवें में चढ़ जाना—इस सब कारगुजारी की बहादुरी और खुशी उसमें लुप्त हो गयी। उसे अजब-सा लग आया। उसे अपने बाप के प्रति सहानुभूति हुई। उसके मन में चित्र उठ आया कि कैसे जल्दी में कोट डालकर, छतरी लेकर, खीझे-से पिताजी दफ्तर के लिए चल पड़े होंगे। वह खाता रहा

और अपने पिता को जाते हुए देखता रहा। सहसा उस सूने में उसके पिताजी मिट गये और उस जगह पर माता जी आ गयीं। बोली—‘और लेगा?’

‘नहीं।’

‘तो अच्छा बैठ के अब पढ़। बाहर आना-जाना नहीं; कहीं जो ऊधम मचाने निकल गये।’

बालक ने सुन लिया। एक क्षण को माँ की ओर देखता रहा, फिर आँख नीचे किये कर्तव्यपूर्वक खाने के बर्तनों को सामने से उठाया और उन्हें यथा-स्थान रखने को चला। माँ देखती रही। यह लड़का उसकी समझ से बाहर हुआ जा रहा है। कभी लड़के जैसा रहता नहीं, मानो एकदम बूढ़ा बुजुर्ग हो। तब वह डर जाती है, जैसे अपने पर पछतावा हो और उस समय उस बुजुर्ग से बात छेड़ने का कोई उपाय भी नहीं रह जाता। उसमें सहसा मातृ-भावना उमड़ती है, पर उसके प्रकाशन का कोई कारण नहीं मिल पाता। परिणामतः उठी सहानुभूति रोष बन जाती है। माँ बोली—‘क्यों, मेरे हाथ टूट गये हैं क्या कि लाड़ले साहब खुद बर्तन उठाकर चले? सुन ले, यह मेरे यहाँ नहीं चलेगा। यह नखरे दिखाना अपने बाप को !’

बालक धीर-गम्भीर अपने बर्तन रखकर लौटा। तौलिए से मुँह पोंछा और बिना एक शब्द बोले छोटी-सी मेज के पास पड़ी कुर्सी पर ऐसे आन बैठा जैसे कुछ हुआ न हो।

माँ के लिए कुछ न रहा। बालक पर फूलती तो कैसे ? अपने को झिझोड़ती तो कैसे ? इससे झीखती हुई। वहाँ से अलग चली गयी और काया को एकदम काम में झोंक दिया। वेग से वह काम में जुट गई। उसके पास के यही उपाय है—काम, काम, काम ! मन का पता लेने की उस समय जरूरत नहीं रहती मानो बाहर सब सुन्न हो आया है और वह खुद काम में फँसकर शान्त बनी रहती है।

काम के बीच उसने सुना—‘मैं जा रहा हूँ।’ सुनकर माँ की हठीली शान्ति में एकाएक आग लग गई। दहाड़कर बोली—‘नहीं।’

बालक मानो बहरा हो, उसने सुना ही न हो, वह द्वार की ओर बढ़ा कि बिजली की तेजी से माँ ने तपककर उसे बाँह से पकड़ा; कहा—‘जाता कहाँ है ? आ, आज तेरी हड्डी-पसली ही तोड़ कर रख दूँ।’

बालक ने प्रतिरोध ही नहीं किया। माँ ने भी मारा नहीं, खींचती हुई अन्दर ले जाकर खाट पर पटक दिया और कहा—‘मुझे तूने क्या समझ रखा है ? मैं घर की बस कहारन हूँ। एक बार जब कह दिया कि बाहर नहीं जाना है तो तुझे हिम्मत कैसे हुई उठने की ?’

खाट पर स्वस्थ-भाव से नीचे लटके पैरों को हिलाते हुए बालक ने कहा—‘मुझे काम है।’

‘काम है !’ माँ ने कहा, ‘बताऊँ अभी तुझे काम?’

लेकिन अपनी धमकी से माँ को सन्तोष न हुआ। कारण बालक सामने पूरी तरह स्वस्थ और सौम्य मालूम होता था। उसकी देह को रोष का आवेग प्रचंड रूप से झकझोर गया। विस्मय यही था कि वह खड़ी कैसे रह सकी। बालक किंचित् मुस्कुराकर शान्त भाव से बोला—‘अव्वल आने की लड़कों को मिठाई देनी है। पिताजी ने कहा था।’

पिताजी ने कहा था। आये बड़े पिताजी, मिठाई खिलायेंगे। घर वालों को पहले रोटी तो खिला लें। यों बस लुटाना आता है। नहीं, कोई नहीं, बैठ यहीं कोने में, और अपना काम देख।

बालक चुपचाप पैर लटकाए बैठा माँ को देखता रहा। बोला—नहीं ? माँ क्षण भर उसे देखती रही। यह अफने को समझ न पा रही थी। इस लड़के पर उसे गर्व था। यह दुनियाँ में उसी का बेटा है। उसका अपना बेटा है। अव्वल आया है। आयेगा क्यों नहीं ? मेरा बेटा जो है। बोली —‘खबरदार जो हिला ! टाँग तोड़कर रख दूँगी जो कुछ समझता हो तो। वह कमरे में बाहरहोने की मुड़ी की डग बढ़ता-बढ़ता रुका रह गया। एक बिजली-सी भीतर कौंध गई। वह ठिठक आई। उसकी आँखें फैली। पूछा—‘मच बताला, वह जा रहा था ?’

बालक जैसे प्रश्न को समझ न सका, वह विस्मय से चुप रह गया।

बोली—‘सब समझती हूँ। वहीं जा रहा होगा। कह गये होंगे चुपके से कि आने दो अब की उन्हें।’

बालक चुप रहा।

माँ ने कहा—‘बोलता क्यों नहीं है? वहीं नमिठाई पहुँचाने जा रहा था।’

बालक बोला—‘हाँ।’

हाँ सुनकर सन्न रह गई। फिर उसका अपने पर बस न रहा। उसका हाथ छूट पड़ा और बच्चे की उसने खासी मरम्मत कर डाली। बच्चा पिटता रहा, मगर रोया नहीं। रोया नहीं, इससे माँ अपनी मार जल्दी न खत्म कर सकी। अन्त में थकना हुआ और माँ बालक को खाट पर औंधा पड़ा छोड़ लौट आई।

सोचने लगी की यही उसका भाग्य है। घर में एक वह है और उसका काम। काम ही एक संगी है। एक रोज इसी में मर जाना है। बाकी तो सब बरी है। मुझे तो मौत आ जाये तो भला। एक वह हैं कि सबेरे छाता उठाया और चल दिये, और शाम को आये कि सब किया-धरा मिले। एक मैं करूँ और मैं हीं करूँ। मरने को मैं और मौज करन को चाहे कोई दूसरी.....और एक यह है कमबख्त। मुझे तो गिनता ही नहीं, बस सदा उनके कहने में। घर क्या जेल हैं; एक इसने बाँध रखा है। नहीं तो जहाँ होता चली जाती, मगर यहाँ का मुँह न देखती, न दाना लेती, न पानी - पर यह छोकरा ऐसा बेहया है कि....।

सोचती जाती और करती जाती थी काम। हाथ काम पर तनिक भी शिथिल न पड़ पाते। सफाई उसने अतिरिक्त कर डाली। व्यवस्था और व्यवस्थित हो गई। तो भी समय का अन्तर न आया। यह उसे अच्छा न लगता था, खालीपन उसे काटता था। विश्राम मानो उसे नरक हो जाता था। पर काम ही कुछ न रह गया था। ऐसे में वह अन्दर गई, देखा बालक पड़ा सो रहा है। उसे पहले अचरज हुआ मानो याद करके उसने जाना कि वह तो पिट कर सोया है। वह कुछ देर खाट के पास खड़ी अपने इस अबोध शिशु को देखती रह गई। उसमें अनुताप उमड़ा। उसके मन में अपने इस लाड़ले के लिए प्यार भर आने लगा। देखो कि घर में ही रह कर भी अनाथ-सा रहता है। मैं जब हुआ झिड़कती रहती हूँ। उन्हें..... सो उनको कहाँ ध्यान है अपना या किसी का ? वह आहिस्ता से अपने छौने के पास आन बैठी। फिर हौले भी उसके गाल के नीचे अपने हथेली देकर चेहरा ऊपर उठाते हुए बोली—

बालक ने आँख खोली, जैसे उसे पहचानने में कुछ देर लगी हो। फिर भी उसे माँ का यह प्यार अच्छा लगा, जैसे कब से छूट गया हो और अब मुद्दत बाद मिला हो। उसने फिर आँखें मींच लीं और अपने को उस प्यार में अशक्य छोड़ दिया, बालक की दोनों कनपटियों को हाथ में लेकर माँ बोली—‘आँख खोल बेटे, क्या इनाम लेगा, माँ से बता !”

बेटा विह्वल हुआ पड़ रहा, उसने कुछ बताया नहीं। माँ ने कहा—‘दो रुपये लेगा। अच्छा पाँच रुपये उठ !”

इतने में ध्वनि आई—‘ओहो आज तो बड़े प्यार हो रहे हैं’ — साथ ही बालक के पिता ने एक खूँटी से छाता लटकाया और कोट के बटन खोलना शुरू किया।

बालक की माँ फौरन उठ गई। चेहरा खिंच आया, ओठ बन्द हो गये और वह तेजी से बाहर जाने को हुई। बालक झपटकर उठ बैठा। बोला—‘पिताजी मैं क्लास में फर्स्ट आया हूँ।’

पिता बोले—‘ओह, तभी तो कहूँ कि पाँच रुपये किस बात का इनाम है।’

माँ बोली—‘कैसे पाँच रुपये ! आसमान से आ जायेंगे। लाके दिया है तुमने इस महीने में ! घर में तो मैं हूँ, रुपये होंगे किसी और के लिए !’

‘अच्छा, अच्छा’, पिता बोले क्या इनाम लेगा !’

बालक सोचता रहा। बोला—‘आप देंगे ?’

पिता बोले—‘कैसे पागल-सी बात करता है ! अरे देंगे नहीं तो क्या यों ही। सौ लड़कों में अब्बल आना क्या हँसी खेल है ?’

माँ बोली—‘ला रे मेरे पाँच रुपये !’ — और बच्चे के हाथ से अपना पाँच का नोट ले वह झपट कर चौके में चली गई।

उसी समय जीने पर चप्पलों की आहट हुई, और प्रमिला ने प्रवेश किया। हाथ में उसके रुमाल से ढँकी तश्तरी थी। बालक उसे देखते ही उछाह से उसकी ओर दौड़ा। प्रमिला बोली—‘सबर तो कर; तेरे ही लिये तो यह लाई हूँ। क्यों रे, कहा भी नहीं और अब्बल आ गया।’

बालक के पिता ने कहा—‘प्रमिला !’ और माना वह आस-पास देखने लगे कि पत्नी कहाँ है। पत्नी आहट पा हाथ का सब काम छोड़ नीचे की ओर आँख लगा रही थी, यद्यपि चौके से नहीं निकली थी; पर अन्दर कोने की खिड़की से सब कुछ निगाह में रखने का प्रयत्न कर रही थी।

प्रमिला के गले से लगे-लगे अपनी जगह आते हुए बालक को सहसा माँ के चेहरे की झलक दीख गई।

प्रमिला ने कहा—‘यह ले बेटे, बता और क्या इनाम लेगा ?’

‘माँगूंगा तो दोगी ?’

‘हाँ दूँगी। पर तू बदमाश है, मुझी को न माँग लेना ?’

‘बुरा न मानोगी’

‘सुना पगले की बातें। इसका मैं बुरा मानूँगी।’

बालक ने प्रमिला को पास बिठा लिया। उसके गले में हाथ डालकर वह बोला—‘देखो, टालना मत ! मेरा इनाम यह है कि इस घर में तुम अब से कभी मत आना। तुम मुझ प्यार करती हो न !’

पिता बोले—‘यह क्या बकवास है मुन्ने।’

मुन्ने ने कहा—‘आप भी तो इनाम देंगे, यही दीजिए कि इनसे कभी मत मिलिये।’

पिता कुछ समझें कि छटपटाती हुई माँ आई। बालक को गोद में उठाकर बोली—‘हाथ क्यों बन्द किये हो जी ? खोलकर आगे क्यों नहीं कर देते, दस का नोट। मुट्ठी में नाहक मुड़ रहा होगा।.....और प्रमिला, बड़े दिनों में आई हो। बैठो, तुम भी चखो न यह खुशी की मिठाई।’

बालक ने सबको देखा मानो मैल धुल गया, क्षण को ही सही, पर क्षण क्या सत्य नहीं होता !

अभ्यास :

1. प्रमिला कौन थी ?
2. धनंजय की माता उसे क्यों पीटती है ?
3. इनामी कहानी में धनंजय किससे क्या इनाम माँगता है ?

पत्रकारिता

पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत व्यापक है। भारत में पहला समाचार पत्र 29 जनवरी 1780 को “बंगला गजट” या “दि कलकत्ता जनरल एडवाइजर” के नाम से प्रकाशित हुआ। इसका श्रेय जेम्स अगस्टस हिकी को जाता है। हिन्दी का पहला पत्र ‘उदन्त मार्तण्ड’ के नाम से 9 फरवरी 1826 को प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक कानपुर निवासी श्री युगलकिशोर शुल्क थे। 4 मई 1988 के नवभारत टाइम्स में छपे समाचार के अनुसार विश्व की दस बड़ी संस्थाएँ प्रति दिन औसतन 3.40 करोड़ शब्द प्रसारित करती हैं।

पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य है किसी भी घटना के सत्य को शुद्ध रूप में जनता तक पहुँचाना। सच्चा पत्रकार इस उद्देश्य को अपना धर्म समझकर उसे निर्भिकता से निभाता है। गाँधीजी, गणेशशंकर विद्यार्थी एवं माखनलाल चतुर्वेदी जैसे तपस्वी पत्रकार इसके मिसाल हैं। ईमानदार, जिम्मेदार एवं सज्जन पत्रकार इस तथ्य से भलीभाँति परिचित रहता है कि समाचार में छपा हरेक शब्द पाठक के लिए किस प्रकार एक अहम् भूमिका निभाता है। सच्चे एवं निर्भिक पत्रकारों के समाचारों को पढ़कर एवं उनकी सत्यता को जानकर ही पाठक समाचार में छपे हरेक शब्द को निःसंकोच ‘वेदवाक्य’ समझ लेता है और वह समयानुसार एवं विषयानुसार इन समाचारों के उद्धरण देकर अपने मत की सत्यता पुष्ट करता है। स्वतंत्रतापूर्व, पत्रकारिता एक मिशन थी परन्तु अब एकमात्र सेवा न रहकर व्यावसायिक शर्तों से जुड़ी हुई है। अतः समाचार पत्र का मालिक येन-केन-प्रकारेण अखबार की बिक्री बढ़ाने में रत, नैतिक मूल्यों को भूलता जा रहा है। जिसकी प्रतिक्रियास्वरूप पत्रकारिता के क्षेत्र में एक बीमार मानसिकता ने जन्म लिया। इस बीमार मानसिकता वाली पत्रकारिता का नाम है। “पीत पत्रकारिता”

पत्रकारिता यानी क्या केवल खबरें जुटाना, प्रकाशित करना और प्रसारित कर देना भर है? निश्चय ही नहीं। तब पत्रकारिता क्या है?

पत्रकारिता समाज का आईना है। वह मनुष्य की आस्थाओं, विचारों, मूल्यों को सही रूप में जनता के सामने रखती है। तब, पत्रकारिता का लक्ष्य है। दूसरे शब्दों में मनुष्य को संकीर्णता, अंधी परम्परा, कुप्रथा व जड़ता से छुटकारा मिले, वह खिले और खुले।

दरअसल, पत्रकारिता समसामयिक इतिहास है जो रोज लिखा जाता है। दैनिक घटने वाली घटनाओं को जल्द से जल्द जनता के सामने लाना पत्रकारिता है। यह घटना राजनीतिक या सामाजिक हो सकती है या फिर सांस्कृतिक या आर्थिक या फिर किसी और क्षेत्र की। रहस्योद्घाटन (रहस्य को उजागर करना) ही पत्रकारिता की धड़कन है। जो कुछ भी पत्रकार को ज्ञात होता है वह इतिहास का हिस्सा होता जाता है।

पत्रकारिता माध्यम है पत्रकार द्वारा चारों कोनों (उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम) से घटनाओं की सामग्री जुटा कर जनता के सामने रखने का। यानी इसी के माध्यम से हम विश्व से अपने आप को जोड़ सकते हैं।

इधर इक्कीसवीं सदी के आरंभ से श्रव्य तथा दृश्य संचार माध्यमों ने पत्रकारिता के छपे-व्यक्तित्व को बहुआयामी, पेचीदा, जटिल तथा सबसे अधिक चुनौती भरा बना दिया है। उपग्रहों के आधार पर विकसित, लगभग अविश्वसनीय तकनीकों ने तो टेलीविजन पत्रकारिता को इतना अधिक समृद्ध और व्यापक बना दिया है कि यह प्रिंट-मीडिया के सामने सबसे बड़ी चुनौती बन गया है। घटनाओं को जस-का-तस और वह भी जल्द-से जल्द दिखा देने वाले वीडियो-माध्यम से भारत जैसे विकासशील देशों की पारंपरिक-पत्रकारिता जूझ रही है। इससे पत्रकारिता के विभिन्न माध्यमों में जो तीखी स्पर्धा शुरू हो गयी है उससे भविष्य की पत्रकारिता में क्रांतिकारी परिवर्तन अनिवार्य हो गए हैं। इनमें से कुछ परिवर्तन तो वीडियो-पत्रिकाओं के रूप में आकार भी लेने लग गए हैं।

जन संचार माध्यमों के घर-घर स्थापित हो जाने के कारण यह युग सूचनाओं के विस्फोट का युग बन गया है। सूचनाओं, घटनाओं का प्रचार-प्रसार हमारी सामाजिक व्यवस्था का जरूरी हिस्सा बन गया है। यह एक तथ्य है कि सामाजिक जरूरतों ने विभिन्न देशों में पत्रकारिता को विकसित होने का मौका दिया तथा वहाँ के हालात ने उसे प्रभावित भी किया। लेकिन एक बार अपने पैरों पर खड़े होने के बाद पत्रकारिता ने लोकतांत्रिक देशों में लोकतंत्र के चौथे पाए की हैसियत पा ली। यानी विश्व के अधिकतर देशों में आज पत्रकारिता स्वयं इस स्थिति में आ चुकी है जहाँ से वह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, बौद्धिक सभी पहलुओं को प्रभावित कर रही है तथा कई मामलों में तटस्थ निर्णायक की भूमिका भी निभा रही है।

अभ्यास

प्रश्नों के उत्तर दें :-

1. भारत में पहला समाचार पत्र कब प्रकाशित हुआ? उसका नाम क्या था ?
2. “खोजी पत्रकारिता” किसे कहते हैं ?
3. पत्रकारिता क्या है?
4. पत्रकारिता आज कैसी भूमिका निभा रहा है?

पाठ — 17

मीनाक्षी मंदिर

मीनाक्षी मंदिर तमिलनाडु के मदुरै नगर में है। यह नगर आनै मलै, नाग मलै, पसु मलै, तिरुप्परंकुरम आदि पहाड़ों के बीच बसा है। मंदिर की लंबाई 847 फीट और चौड़ाई 792 फीट है। इस मंदिर में कुल नौ गोपुरम हैं। किंतु मंदिर के बाहर वाले चार गोपुरम ही सबसे सुंदर और ऊँचे हैं। इनका निर्माण आगम, शिल्प शास्त्रों तथा वास्तुशास्त्रों के अनुसार हुआ है। इनमें दक्षिणी गोपुरम 152 फीट ऊँचा है तथा पौराणिक कथाओं से संबंधित अनेक मूर्तियाँ और प्रतिमाएँ हैं।

उत्तरी राजगोपुरम नाट्टुक्कोट्टै चेट्टियार जाति के धनिकों से बनवाया गया। इसमें भारत के अनेक प्रदेशों में स्थित मंदिरों के विमान बनवाये गये थे। इसी द्वार से मंदिर में प्रवेश कर सकते हैं। यहाँ पांच संगीत स्तंभों को देखते हैं।

पहले यह मंदिर सुन्दरेश्वर मंदिर कहा जाता था लेकिन मीनाक्षी देवी की महिमा इतनी अधिक हुई कि मंदिर का नाम मीनाक्षी देवी मंदिर हो गया।

मीनाक्षी शब्द का अर्थ है मीन यानी मछली के समान सुन्दर आँखोंवाली देवी। इसके लिए यह भाव प्रकट किया जाता है कि मछली अपने अंडों को अपनी शक्ति लगाकर देखती है। इससे उन अंडों से छोटी-छोटी मछलियाँ पैदा होती हैं। इसी प्रकार भक्तों पर मीनाक्षी देवी की कृपा बनी रहती है।

अभ्यास

प्रश्नों के उत्तर दें :-

1. मीनाक्षी मंदिर कहाँ स्थित है?
2. मीनाक्षी मंदिर की विशेषताएँ लिखें?
3. मीनाक्षी मंदिर का नाम कैसे पड़ा?
4. उत्तरी गोपुरम किसने बनवाया?
5. ‘मीनाक्षी’ का अर्थ बताएँ?

यूनिट – 10

पाठ – 18

पत्र लेखन

पत्र लेखन भी एक कला है। इस कला का हमारे जीवन के साथ गहरा सम्बन्ध है। मन के उद्गारों को प्रकट करने का यह सर्वोत्तम साधन है। जो बात हम संकोचवश किसी को नहीं कह पाते, वह बात हम पत्र लिखकर आसानी से कह सकते हैं। पत्र बिगड़ते हुए काम बना देते हैं। जीवन में सफलता पाने के लिए अच्छे और प्रभावशाली पत्र लिखने चाहिए। इसके लिए अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है।

पत्र लिखते समय कई बातों की ओर ध्यान देना चाहिए। पत्र की भाषा सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए। पत्र लिखते समय लेखक को आत्मीयता का परिचय देना चाहिए। पत्र में मूल विषय पर बल देना चाहिए। अनावश्यक विस्तार का कोई लाभ नहीं होता। पत्र में ऐसी बात कभी नहीं लिखनी चाहिए जिसके दो-दो अर्थ हों।

पत्र के प्रकार

1. **व्यक्तिगत पत्र (Personal Letter)** – चाचा, दादा, नाना, पिता, मित्र, संबंधी आदि को लिखे जाने वाले पत्र व्यक्तिगत पत्र कहलाते हैं।
2. **व्यावसायिक पत्र (Business Letter)** – दुकानदार, वकील, डाक्टर, बैंक मैनेजर आदि को लिखे जाने वाले पत्र व्यापारिक या व्यावसायिक पत्र कहलाते हैं। इसमें औपचारिकता (Formality) और विनम्रता होती है।
3. **सरकारी पत्र (Official Letter)** – सरकारी अधिकारियों को लिखे जाने वाले पत्र सरकारी पत्र कहलाते हैं। इसमें संयमित और नियंत्रित भाषा होती है। ये भी औपचारिक पत्र होते हैं।
4. **सार्वजनिक पत्र (Public Letter)** – किसी व्यक्ति विशेष, सरकारी अधिकारी तथा समाचार-पत्र के सम्पादक को लिखे जाने वाले पत्र इसमें आते हैं। इनमें प्रायः नागरिक समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है।

1. पत्र-लेखक के स्थान का उल्लेख
2. पत्र लेखन की तिथि
3. पत्र पाने वाले को प्रशस्ति व अभिवादन
4. समाचार
5. पत्र की समाप्ति पर लेखक का नाम
6. पत्र पाने वाले का नाम व पता

पत्रों से संबंधित सम्बोधन, अभिवादन, समापन की तालिका

पत्र तथा प्रार्थना-पत्र

1. अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र

सेवा में

श्रीमती प्रधानाचार्य जी,
डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल
बोकारो स्टील सिटी।

माननीय जी,

सविनय निवेदन है कि कल जब मैं विद्यालय से घर पहुँची तो मुझे सर्दी लगने लगी। सायंकाल जोर का बुखार हो गया। अतः आज मैं विद्यालय में उपस्थित होने में असमर्थ हूँ। मुझे दो दिन का अवकाश देने की कृपा करें।

दिनांक : 15 अप्रैल, 2008

आज्ञाकारिणी शिष्या,

रुबी अग्रवाल

कक्षा आठवी (बी)

2. भाई के विवाह के लिए अवकाश प्रार्थना-पत्र

श्रीमान् आचार्य महोदय,
बाल भारती पब्लिक स्कूल
नई दिल्ली

मान्यवर महोदय,

सादर नमस्कार !

सविनय निवेदन है कि 14 अप्रैल, 2008 को मेरे बड़े भाई का शुभ विवाह होगा। हमारे घर में सम्बन्धी तथा मित्र आने लगे हैं। मुझे घर पर अनेक कार्य करने पड़ते हैं। इसलिए कृपा करके मुझे 12, 13 और 14 अप्रैल -इन तीनों दिनों का अवकाश देकर कृतार्थ करें।

तारीख : 11.4.2008

आपका आज्ञाकारी शिष्य

पवन चतुर्वेदी

नवीं

सम्बन्ध	संबोधन	अभिवादन	समापन
बड़ों को पिता, माता, गुरु बड़ा भाई आदि	पूज्य, पूजनीय, पूज्या, आदरणीय, माननीय, श्रद्धेय, परमपूज्य,	सादर प्रणाम, सादर नमस्कार, नमस्कार, चरण स्पर्श, प्रणाम, चरणवन्दना	आपका आज्ञाकारी, आपका कृपाकांक्षी, विनीत, स्नेह भाजन,
मित्र को	प्रिय मित्र, रमेश, प्रिय बन्धु, बन्धु वर	नमस्ते, नमस्कार सप्रेम नमस्ते	तुम्हारा मित्र तुम्हारा हितैषी
बराबर वालों को	प्रिय भाई, प्रिय बहन प्रिय बन्धु, बन्धुवर	नमस्ते, नमस्कार	प्रेमाकांक्षी, उत्तराभिलाषी, तुम्हारा
छोटों को	प्रिय.....। चिरंजीव.....	आशीर्वाद, सुखी रहो चिरंजीव रहो	तुम्हारा शुभचिन्तक तुम्हारा हितैषी, शुभाकांक्षी
अपरिचितों को	श्रीमान, महोदय, महोदया	नमस्ते	भवदीय
अधिकारियों को	श्रीमान, मान्यवर		भवदीय, निवेदक, प्रार्थी

3. सखी व मित्र को चाय के लिए निमन्त्रण-पत्र

प्रिय सखी लता सुब्रह्मण्यम

स्नेह नमस्ते !

आशा है कि तुम स्वस्थ और प्रसन्न होगी। आगामी शुक्रवार 8 अप्रैल, 2008 को सायं पाँच बजे तुम हमारे घर पर चाय के लिए पधारना। इस अवसर पर जोधपुर से शैलजा और जालंधर से कान्ता भी आ रही हैं। इस प्रकार सखियों के इकट्ठा होने पर वार्तालाप का भी मधुर अवसर प्राप्त होगा। तुम स्वीकृति का पत्र अवश्य लिखना।

दिनांक : 2 अप्रैल, 2008

एम-15, कामराज नगर

मदुरै — तमिलनाडु

तुम्हारी अभिन सखी
वल्ली

4. शुल्क (फीस) माफ कराने के लिए प्रार्थना-पत्र

सेवा में,
श्रीमान् प्रधानाचार्य जी,
सरदार पटेल स्कूल
नई दिल्ली।

मान्य महोदय,

निवेदन है कि मेरे पिता जी का वेतन 950 रुपये मासिक है। इतने वेतन में हमारे परिवार का गुज़ारा नहीं होता। मेरा बड़ा भाई कॉलज में पढ़ता है और बड़ी बहन बारहवीं कक्षा में पढ़ती है। मैं आपके विद्यालय में पाँचवीं कक्षा में पढ़ता हूँ। हम सबकी पढ़ाई पर बहुत खर्च आता है।

मैं आरम्भ से ही आपके विद्यालय का छात्र हूँ। मैं कक्षा में सदा प्रथम आता रहा हूँ। मैं फीस देने में असमर्थ हूँ। आगे पढ़ाई कैसे करूँ? यदि आप कृपा करके मेरी फीस माफ कर दें, तो मैं आगे पढ़ सकता हूँ। आपकी कृपा का मैं सदा आभारी रहूँगा।

दिनांक : 5. 4. 2008

आपका आज्ञाकारी शिष्य

राकेश शर्मा

नौवीं

5. पुस्तकें मँगाने के लिए पुस्तक विक्रेता के नाम पत्र

सेवा में,

व्यवस्थापक,

आर्य बुक डिपो,

30 नाईवाला, करोल बाग,

नई दिल्ली - 110005

महोदय,

कृपया पत्र देखते ही नीचे लिखी पुस्तकें वी. पी. पार्सल द्वारा भेज दें। भेजने से पूर्व यह भली-भाँति देख लें कि पुस्तकें कटी-फटी न हों। यदि जिल्दवाली हों तो वही भेजिएगा और यदि जिल्दवाली न हों तो बिना जिल्द की ही भेज दीजिएगा। दाम सूचीपत्र के अनुसार ठीक लगाइएगा तथा उस पर उचित कमीशन भी अवश्य काटिएगा।

पुस्तकों के नाम

- | | |
|---------------------------|-------------|
| 1. भाषा निबन्ध तथा रचना | 2 प्रतियाँ। |
| 2. राष्ट्रभाषा व्याकरण | 2 प्रतियाँ। |
| 3. आओ हिन्दी सीखें, भाग 5 | 2 प्रतियाँ। |

आशा है, आप सारी पुस्तकें शीघ्र ही भेज देंगे। धन्यवाद सहित-

1, लायब्रेरी रोड,

मसूरी

दिनांक : 15 मार्च, 2008

भवदीय

अजय वर्मा

6. मित्र या सखी को पत्र-सड़क पर चलने के नियम बताने के लिए

कनोट प्लेस मार्ग

नई दिल्ली

दिनांक 30.3.2008

प्रिय सखी प्रेमा,

सस्नेह जयहिन्द!

तुम पहली बार गाँव से शहर में आई हो, अतः मैं तुम्हें सड़क पर चलने के नियम लिख रही हूँ। प्रिय सखी, इन नियमों का ध्यान न रखने के कारण ही कई बार दुर्घटनाएँ हो जाया करती हैं।

सड़क पर सदा अपने बायें हाथ चलना चाहिए। बीच सड़क में कभी नहीं चलना चाहिए। जहाँ पटरी हो वहाँ सदा पटरी पर ही चलना चाहिए। सड़क पार करते समय दाएँ-बाएँ दोनों तरफ देख लेना चाहिए यदि कोई सवारी (मोटर, ताँगा, ट्रक आदि) आ रही हो, तो तुरन्त रुक जाना चाहिए। चौक में लगी हरी और लाल बत्ती के संकेत का भी ध्यान रखकर सड़क पार करना चाहिए। तेज आ रहे ताँगे, मोटर, बस, ट्रक आदि से पहले सड़क पार करने का प्रयत्न कभी नहीं करना चाहिए। सड़क के चौरास्ते में जहाँ 'पैदल पार पथ' (जैब्रा) के चिह्न बने हों, वहीं से सड़क पार करनी चाहिए।

आशा है, तुम इन बातों का ध्यान रखकर ही सड़क पर चलोगी।

तुम्हारी प्रिय सखी।

गीता

7. अपने मित्र को पत्र (परीक्षा के बाद क्या करने का विचार है?)

डी-13, मालवीय नगर

नई दिल्ली

दिनांक 15.4.2008

प्रिय मित्र अशोक,

सस्नेह जयभारत!

तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। धन्यवाद! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है कि इस परीक्षा के बाद मेरा क्या करने का विचार है। निवेदन है कि आजकल शिक्षा के बिना मनुष्य का कुछ भी मूल्य नहीं है। दसवीं पास किए बिना तो कोई चपरासी भी नहीं रखता। सो भैया। मेरा तो विचार है कि छठी पास करके सातवीं कक्षा में प्रविष्ट हो जाऊँ और आगे एम. ए. तक पढ़ता जाऊँ।

तुम्हारा स्नेही

मोहन

8. सरकारी अधिकारी (अफसर) के नाम पत्र

सेवा में,

क्षेत्रीय स्वास्थ्य अधिकारी,

दिल्ली नगर निगम,

नई दिल्ली - 110027

महोदय!

यों तो राजौरी गार्डन एक बहुत साफ-सुथरी बस्ती है, परन्तु जब वर्षा होती है, तो सड़कों के ऊपर कई-कई फुट पानी खड़ा हो जाता है। जब पानी उतर जाता है तो भी मकानों के साथ-साथ गई नालियों में मच्छर फैल जाते हैं। इन नालियों की सफाई का कुछ भी प्रबन्ध नहीं किया जाता। इससे मलेरिया फैलने का भय रहता है।

कृपया आप इन नालियों की सफाई का तुरन्त ही कुछ प्रबन्ध करवाने की कृपा करें। यदि आप स्वयं एक बार कष्ट करके निरीक्षण कर लेंगे, तो आपको मेरी बात की सच्चाई का पता चल जाएगा।

जे-36, राजौरी गार्डन,

नई दिल्ली - 110027

दिनांक : 8.8.2008

आपका देवनाथ गौड़
मंत्री, राजौरी गार्डन सभा
प्रिय सखी प्रेमा,

पाठ - 19

खबर तैयार करना

समाचार लेखन में छः ककारों का सिद्धान्त अपनाया जाए तो समाचार सही रूप लेगा।

यह छः ककार इस प्रकार हैं -

1. क्या - घटना क्या है?
2. कहाँ - घटना कहाँ किस स्थान पर घटी है।
3. कब - समय क्या था।
4. किसने - किसने घटना, घटित की या किसके साथ हुई।
5. क्यों - क्या कारण था।
6. कैसे - घटना किस तरह घटी।

यह सिद्धान्त पत्थर की लकीर नहीं है लेकिन इनमें से अधिकतम प्रश्नों के उत्तर समाचार में अवश्य होने चाहिए।

1. क्या - लोकगीत महोत्सव में फिल्मी कलाकारों के बीच मुकाबला।
2. कहाँ - बांद्रा कुरला कॉम्प्लेक्स के विशाल मैदान में।
3. कब - महाराष्ट्र दिवस के शुभ अवसर पर, 1 मई, दोपहर 2:00 बजे।

4. किसने — 'मनरंग लो' सामाजिक संस्था के अध्यक्ष, सुभाष पारसी द्वारा
5. क्यों — महाराष्ट्र दिवस के अवसर पर
6. कैसे — फिल्म अभिनेता संजय दत्त एवं भोजपुरी फिल्म अभिनेता मनोज तिवारी मृदुल के बीच मुकाबला।

फिल्मी कलाकारों के बीच बांद्रा में मुकाबला।

संजय दत्त और मनोज तिवारी होंगे आकर्षण

मुम्बई (न. प्र.)। महाराष्ट्र दिवस के शुभ अवसर पर 'मन रंगलो' सामाजिक संस्था के अध्यक्ष सुभाष पासी द्वारा आयोजित लोकगीत महोत्सव में फिल्मी कलाकारों के बीच मुकाबला होगा। महाराष्ट्र के पूर्व गृह राज्यमंत्री कृपाशंकर सिंह की पहल पर एक मई को दोपहर दो बजे से बान्द्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स के विशाल मैदान पर उत्तर भारतीयों का शक्ति मैदान पर उत्तर भारतीयों का शक्ति प्रदर्शन किया जा रहा है। इस बृहद् आयोजन में मुख्य आकर्षक के केन्द्र रहेंगे फिल्म अभिनेता संजय दत्त एवं भोजपुरी फिल्म अभिनेता मनोज तिवारी मृदुल। इनके अलावा भोजपुरी गीतों के प्रमुख गायकों बिजयलाल यादव, मेघा घाडगे, मीरा मूर्ति, देवी, स्वरूप नायक, सिताराम महात्रे, पूनम सागर, विक्रान्त सिंह, सुनील जानी, प्रेमप्रकाश दुबे, अनुराधा, भानु अग्रवाल उर्फ लालू यादव को एक ही मंच पर लाया जा रहा है। इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में कांग्रेस नेता राज्यसभा सदस्य राजीव शुक्ला, सांसद प्रिया दत्त सहित साहित्यिक एवं राजनीतिक क्षेत्र के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे।

आम जनता के लिए कार्यक्रम में मुफ्त प्रवेश रखा गया है।

PRE FOUNDATION COURSE

प्रथम भाग – हिन्दी

समय : 3 घंटे

कुल अंक : 100

भाग - 'अ' (55 अंक)

I. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक का उत्तर (200) शब्दों में लिखें :- $1 \times 5 = 15$

1. 'रुचि' पाठ में लेखक ने किन-किन रुचियों की बात की है ? रुचि का महत्त्व बताएँ।
2. बेरोजगारी की समस्या कैसे उत्पन्न होती है ? कारणों को लिखें।
3. 'निर्मला' उपन्यास के आधार पर निर्मला की चारित्रिक विशेषताएँ लिखें।

II. नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो का उत्तर एक अनुच्छेद में दें :- $2 \times 7\frac{1}{2} = 15$

1. सन् 1937 में लेखक के साथ क्या हुआ ?
2. किन्हीं पाँच देशों के स्वतंत्रता दिवस के बारे में एक अनुच्छेद लिखें।
3. मीनाक्षी मंदिर की विशेषताओं पर प्रकाश डालें।
4. समाचार-लेखन एक छः ककारों को लिखें।

III. नीचे लिखे किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें :- $10 \times 1\frac{1}{2} = 15$

1. कवि रहीम ने किसे पगली कहा है ?
2. मीनाक्षी मंदिर कहाँ स्थित है ?
3. कवि तुलसीदास किसके भक्त थे ?
4. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता के कवि कौन हैं ?
5. 'कुरुक्षेत्र' के किस सर्ग में कवि ने युधिष्ठिर के बारे में बात की है ?
6. 'मालाबार हिल' कहाँ स्थित है ?
7. कर्मवीर के संपादक कौन थे ?
8. अमरीका का स्वतंत्रता संग्राम कब मनाया जाता है ?

9. 'बेरोजगारी' का अर्थ बताएँ ?

10. सुधा कौन थी ?

11. छोटा जादूगर अपनी जीविका कैसे चलाता था ?

12. सबसे पहला समाचार-पत्र कौन-सा था ?

13. 'मीनाक्षी' शब्द का अर्थ बताएँ।

14. बांग्लादेश कब स्वतंत्र हुआ ?

15. रहीम कवि की रचनाओं के नाम लिखें।

IV. अ. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें :-

5

कोटि कोटि नंगों-भिखमंगों के जो साथ-

खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,

शोषित जन के, पीड़ित जन के कर को थाम,

बढ़े जा रहे उधर, जिधर है मुक्ति प्रकाम,

ज्ञात और अज्ञात, मात्र ही जिनके नाम!

वन्दनीय उन सत्पुरुषों, को सतत प्रणाम !

प्रश्नों के उत्तर दें :-

5×1=5

1. इस कविता के कवि कौन हैं ?

2. ये पंक्तियाँ किस कविता से ली गई हैं ?

3. कवि के अनुसार वीर किनके साथ कंधा जोड़कर खड़े हैं ?

4. सत्पुरुषों को कवि ने क्या नाम दिया है ?

5. 'उन्नत माथ' शब्द का अर्थ लिखें।

V. ब. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दें :-

5

“हरिद्वार से लौटे कि लंका से विश्व बौद्ध बौद्ध-सम्मेलन में सम्मिलित होने का निमंत्रण मिला। वहाँ भारत से जो कोई भी जाता है उसे चेचक का टीका लगवाना पड़ता है। इसी संदर्भ में मुझे पुरानी बात याद आ रही है जब इंग्लैंड जाने के सिलसिले में लंका पहुँचा”

प्रश्नों के उत्तर दें :-

5×1=5

1. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?
2. गद्यांश के लेखक कौन हैं ?
3. हरिद्वार से लौटने पर लेखक को किसका निमंत्रण मिला ?
4. भारत से जाने वाले को लंका में क्या करना पड़ता है ?
5. लेखक कहाँ जाने के सिलसिले में लंका पहुँचा ?

भाग "ब" (45 अंक)

VI. किसी एक विषय पर दो पृष्ठों का निबंध लिखें :-

1×15=15

- क. नारी शिक्षा
- ख. लघु कुटीर उद्योग
- ग. विज्ञान के चमत्कार

VII. नीचे लिखे विषयों में से किसी एक पर निबंध लिखें।

7½

1. समाचार पत्र
2. प्रदूषण

VIII. स्मृति के आधार पर कविता की पंक्तियाँ पूरी करें।

1×7½=7½

1. गंगा यमुना.....धूर।।
2. रहिमान जिह्वा.....कपाल।।
3. नर है.....भारी।।

IX. निर्देशानुसार उत्तर दें :-

अ. रिक्त स्थानों को भरे :-

3×1=3

1. मुझे टीका लगवाने.....जाना पड़ा।
2. भूटान.....है।
3. स्वतंत्रता हमारा..... है।

ख. वाक्य पूरा करें :-

3×1=3

1. इक्कीसवीं सदी की ओर.....
2. निर्मला शहर के जाने माने.....

3. कार्निवाल के मैदान

ग. कोष्ठक में दिए गए शब्दों के आधार पर वाक्य को पुनः लिखें :- $3 \times 1 = 3$

1. मैं सच बोलता हूँ। (भूतकाल)
2. करें काम सब लोग (अपना लगाकर वाक्य बनाएँ)
3. वह खाना खाया (कर्ता में 'ने' चिह्न को लगाएँ)

घ. वाक्य शुद्ध करें :- $3 \times 1 = 3$

1. मैं मेरी कमीज़ पहने हूँ।
2. हमें हमारा काम करना चाहिए।
3. आप आपको देखिए।

ङ. हिन्दी में अनुवाद करें :- $3 \times 1 = 3$

1. He reads book in the night.
2. I will go to Delhi tomorrow.
3. We respect our national language.

